RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹: 30

प्रेरणा विचार

जून-2023 (पृष्ठ-36) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

मानवता को चेतावनी

होलोग्राम
भारतीय टेलीविजन का भविष्य

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)

दूरभाष: 0120–4545608

ई–मेल: ssm.noida@gmail.com

वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

- भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
- नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
- आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
- प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
- सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
- विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

दिनेश गोयल	प्रदीप भारद्वाज	असित त्यागी	प्रकाश वीर
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)

–: इस अंक में :–

04 : संपादकीय

09 : विश्व के कई देशों में भारतीय मूल के नागरिकों की बढ़ती संख्या एवं भारतीय सनातन दर्शन का प्रसार

11 : ऑपरेशन कावेरी : भारतीय वायुसेना सिर्फ आक्रमण नहीं बचाव भी जानती है

12 : विश्व पर्यावरण दिवस

14 : केरल की कहानी, मानवाधिकार और मानव जाति के लिए एक चेतावनी

22 : संघ शिक्षा वर्ग तृतीय वर्ष

23 : भारत के बुनियादी ढांचे पर साइबर हमले का खतरा!

26 : स्तब्ध करती है द केरल स्टोरी

30 : पत्रकारिता जगत में हलचल

32 : मीडिया सुर्खियां

34 : क्या आप जानते हैं ?

05 : मणिपुर में उत्पाद की जड़ें

07 : संवैधानिक मूल्यों को समृद्ध करेगा नया संसद भवन

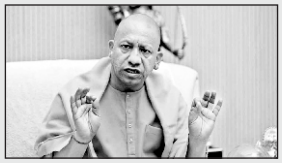

16 : योगीराज में तुष्टिकरण को ना सशक्तिकरण को हां

18 : शरीर, मन और आत्मा को जोड़ता है योग का धागा

20 : होलोग्राम भारतीय टेलीविजन का भविष्य

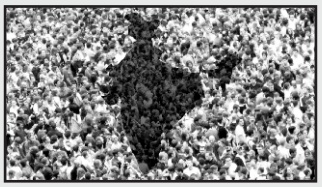

24 : जनसंख्या विस्फोट आपदा या अवसर

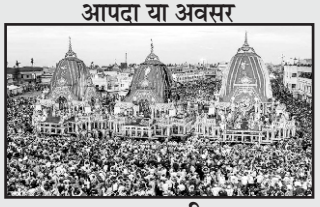

27 : जगन्नाथ-पुरी रथ यात्रा एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

प्रेरणा विचार **RNI No. : UPHIN/2023/84344** वर्ष-1, अंक -6

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
पल्लवी सिंह

अध्यक्ष अणंज कुमार त्यागी की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा
दूरभाष : 0120 4565851, ईमेल : prernavichar@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

संपादकीय

यह एक सुखद संयोग है कि वर्तमान में भारत शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) एवं जी-20 जैसे प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की अध्यक्षता कर रहा है। इससे जहां भारत को अपनी सांस्कृतिक विरासत, क्षमता एवं व्यवस्था को प्रदर्शित करने का अवसर मिला है, वहीं दुनिया की पैनी निगाहें भी उस पर लगी हुई हैं। मई में गोवा में सम्पन्न हुई शंघाई सहयोग संगठन के विदेश मंत्रियों की बैठक में भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी आवाज बुलंद करने का सिलसिला जारी रखा। वर्ष 2001 में शंघाई में निर्मित एससीओ, दक्षिण एशियाई देशों के मध्य सहयोग, अपराध और आतंकवाद से लड़ाई, व्यापार को सुविधाजनक बनाना, राष्ट्रीय सुरक्षा में सहयोग, तकनीकी सहयोग और अन्य क्षेत्रों में सहयोग जैसे विषयों पर सहमति विकसित करता है। चीन और पाकिस्तान के इसमें शामिल होने से भारत के लिए इसका महत्व और भी बढ़ जाता है विशेषतः जब भारत खुद इसकी मेजबानी कर रहा हो। परंतु भारत ने गोवा में यह दोहराने में कोई संकोच नहीं किया कि चीन के साथ उसके रिश्ते सामान्य नहीं हैं। पाक विदेशमंत्री बिलावल भुट्टो द्वारा श्रीनगर में जी-20 कार्यक्रम आयोजित करने और धारा 370 खत्म करने को अंतर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन बताने पर विदेश मंत्री जयशंकर ने "शठे शाठ्यम समाचरेत्" का अनुसरण करते हुए तपाक से समझाया कि पाकिस्तान का जी-20 अथवा श्रीनगर से कुछ लेना देना नहीं है। अब पाकिस्तान से बात सिर्फ यह होगी कि वह पाक अधिकृत कश्मीर पर अपने अनधिकृत कब्जे को कब खाली करेगा? बिलावल द्वारा आतंकवाद पर भारत और पाकिस्तान को मिलकर बात करने की सलाह पर जयशंकर ने उन्हें आतंक के उद्योग को बढ़ावा देने वाला, सही ठहराने वाला, और उसका प्रवक्ता कहते हुए स्पष्ट किया कि आतंक के शिकार, आतंक के आकाओं के साथ बैठकर आतंक पर चर्चा नहीं करते, बल्कि वे अपनी रक्षा करते हैं और आतंक का मुकाबला करते हैं। साथ ही पाकिस्तान को उसकी अविश्वसनीयता का आईना दिखाते हुए तथा उसकी आर्थिक बदहाली पर तंज कसते हुए कहा कि पाकिस्तान की विश्वसनीयता अपने विदेशी मुद्रा भंडार से भी तेजी से गिर रही है।

अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से यह भी अति महत्वपूर्ण है कि संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के अनुसार भारत अब 142.86 करोड़ आबादी के साथ दुनिया में सर्वाधिक जनसंख्या एवं लगभग 20 प्रतिशत मानवता का घर बन गया है। सांख्यिकीय गणनाओं के अनुसार आबादी की यह वृद्धि वर्ष 2064 तक जारी रहेगी। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि 25.4 करोड़ युवाओं के साथ भारत आज दुनिया का सबसे बडा युवा देश भी है। ये युवा नवाचार, नई सोच एवं स्थायी समाधानों के स्रोत हो सकते हैं बशर्ते इनको सही से तराशा जाए। भारत को संख्या के साथ ही जनसंख्या की गुणवत्ता भी सुनश्चित करनी होगी अर्थात् जनसांख्यिकीय लाभांश के लिए मानव संसाधन विकास के कारगर कार्यक्रम सृजित करने होंगे। जनसांख्यिकीय लाभांश को भारत वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनने की कुंजी बना सकता है। परंतु देश को इसका लाभ लेने के लिए उचित नीतियों का निर्माण करना होगा। यही वह समय है जब भारत विकासशील से विकसित देश की कक्षा में प्रक्षेपित हो सकता है। भारत के स्व को जगाने में समावेशी विकास, सामाजिक सरंक्षण, लैंगिक समानता आधारित विकास, जातिविहीन समाज, तुष्टीकरण मुक्त नीति निर्माण आदि भी महत्वपूर्ण होंगे। अवसरों के साथ ही जनसंख्या बढ़ने से पैदा होने वाली सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों के लिए भी देश को तैयार रहना होगा। इस दृष्टि से भी अमृतकाल भारत के लिए निर्णायक है और संभावनाओं से भरा है। चीन की जनसंख्या 2020 से कम होनी शुरू हो गई है और दशक के अंत तक 100 करोड़ से नीचे पहुँच सकती है। आवश्यकता यह भी है कि इस अवधि में देश में राजनीतिक नेतृत्व विकासोनमुखी एवं दूरदृष्टि सम्पन्न हो। अमृतकाल में राजनीतिक अस्थिरता एवं अपरिपक्वता भारतोदय में बाधक सिद्ध हो सकती है।

भारत का महाशक्ति बनना न केवल भारत अपितु विश्व कल्याण के लिए आवश्यक है। अतः भारत के स्वः के आंदोलन को अनवरत जारी रखना होगा। भारत के स्व का मूल आधार है आध्यात्मिक और यह अभिव्यक्त होता है उसकी स्वाधीनता, स्वतंत्रता, स्वदेशी एवं स्वराज्य की संकल्पना से। आवश्यकता है 'स्व' आधारित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सोच, और उस सोच पर आधारित विदेश नीति, रक्षा नीति, शिक्षा नीति, अर्थ नीति, स्वास्थ्य नीति आदि निर्मित करने की। जगजाहिर है कि स्व आधारित भारतीय योग आज दुनिया को शारीरिक एवं मानसिक रोगों से छुटकारा पाने में भूमिका अदा कर रहा है। भारत वह सौभाग्यशाली संस्कृति है जहां इसके स्व को जीवित रखने के लिए अनगिनत ज्ञात-अज्ञात नायकों ने संघर्ष किया और भारत के स्व के लिए स्वयं को न्योछावर कर दिया। महाराणा प्रताप जयंती स्व को जागृत करने के यज्ञ में आहुति देने वाले ऐसे नायकों से प्रेरित हो स्व आधारित व्यवस्था की पुनर्स्थापना के लिए संकल्पित होने की प्रेरणा देती है। भारत के स्व आधारित चिंतन एवं सृजन में पर्यावरण सरंक्षण स्वतः ही निहित है।

आशा है की प्रेरणा विचार का यह समसामयिक विषयों पर आधारित अंक पाठकों की अपेक्षा पर खरा उतरेगा।

संपादक

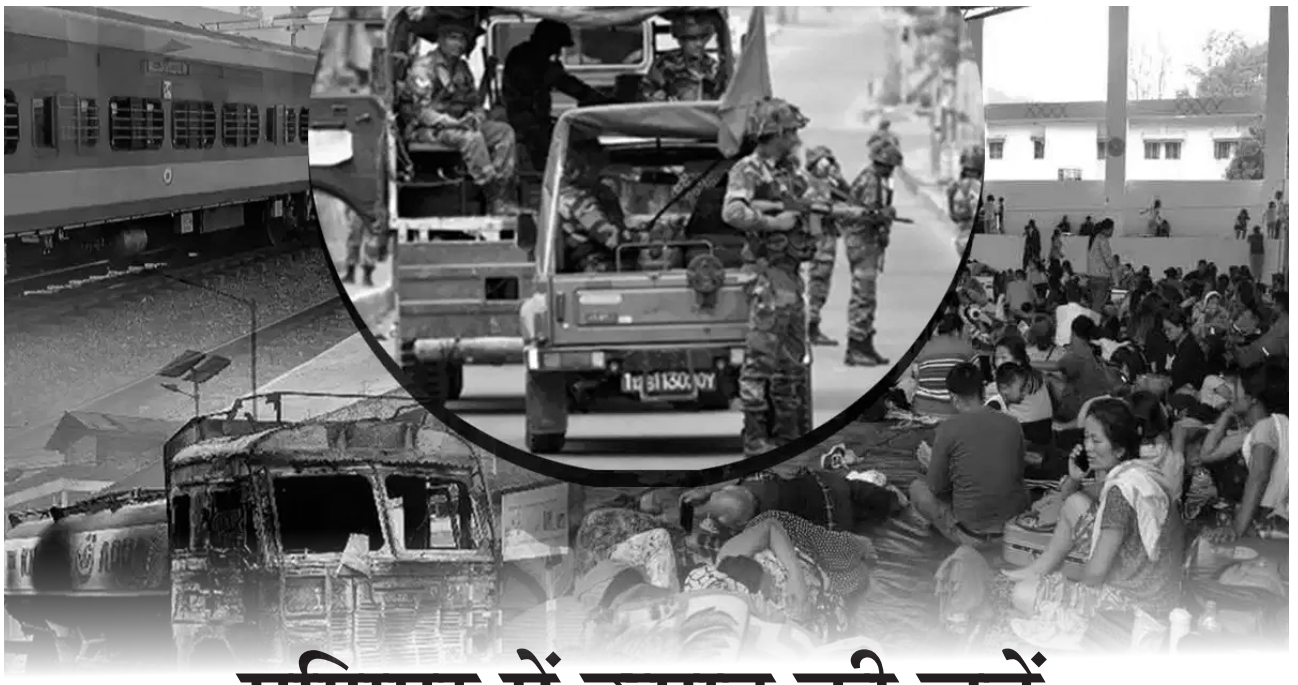

मणिपुर में उत्पाद की जड़ें

नरेन्द्र भदौरिया
राष्ट्रवादी विचारक एवं लेखक

पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर को अफीम की खेती और ईसाई मिशनरियों की पाठशाला ने बहुत बुरे हाल में पहुँचा दिया है। 1947 में मणिपुर में ईसाईयों की अनुमानित जनसंख्या 03 प्रतिशत से कम थी। जब 1961 में जनगणना हुई तो इस राज्य में ईसाई 19 प्रतिशत हो गये। अब राज्य में इनकी जनसंख्या 34 प्रतिशत से अधिक हो चुकी है। यह जनसंख्या वृद्धि अंधाधुन्ध मतान्तरण का परिणाम है। ब्रिटिश भारत में मिशनरियों ने पूरे पूर्वोत्तर में मतान्तरण प्रारम्भ कर दिया था। अरुणाचल प्रदेश में 02 प्रतिशत ईसाई स्वतन्त्रता के पूर्व तक हो पाये थे 2021 तक 41 प्रतिशत हो गये। यह मतान्तरण इन पर्वतीय राज्यों की सनातन संस्कृति से सम्बद्ध जनजातियों की मान्यताओं को कुचलते हुए होता आ रहा है। स्वतन्त्रता के बाद कांग्रेस की सरकारों ने मिशनरियों के इस कुचक्र को खूब प्रश्रय दिया। यद्यपि महात्मा गाँधी ने स्वतन्त्रता से पूर्व ही मुखर होकर मिशनरियों को ऐसा पाप नहीं करने देने के लिए कहा था। पर उनकी बात कांग्रेसी सरकारों ने कभी नहीं मानी।

मणिपुर राज्य का क्षेत्रफल 22347 वर्ग किमी है। इस राज्य की जनसंख्या 2021 में 34 लाख 55 हजार थी। मणिपुर की मूल जनसंख्या मैतेई है। नागालैण्ड से लड़ाका कुकी जनजाति ने स्वतन्त्रता के बाद धीरे-धीरे मणिपुर के पर्वतीय भूक्षेत्र में घुसपैठ कर पाँव जमाने शुरू किये। कुकी समुदाय 60 से अधिक छोटे जातीय कबीलों से मिलकर बना था। ईसाई मिशनरियों ने इनको मतान्तरित करके एक समूह के रूप में खड़ा करना शुरू किया। किन्तु सरकार की ओर से आदिवासी जनजातीय वर्गों के लिए आरक्षित सुविधाओं का लालच इन मतान्तरित समूहों में बना रहा। आज भी ये अपनी जनजातीय पहचान से लाभ लेते हैं।

मणिपुर के धर्मान्तरित कुकी ईसाई जनजातीय आदिवासी कहलाते हैं। इनको सरकार पूरी सुविधाएं देती है। आरक्षण मिलने से कुकी से ईसाई बने समूहों में से बहुत से लोग सरकार के हर स्तर पर आसीन होते रहे हैं। राज्य सरकार बहुत बार चाह कर भी इनको रोक नहीं पाती। मिशनरी संगठन मणिपुर की 64 प्रतिशत से अधिक मैतेई जनजातीय जनसंख्या पर भारी पड़ते हैं। इनके बीच गहरी खाई है।

मणिपुर के मुख्यमंत्री नोंगथाम्बम बीरेन सिंह 60 सदस्यीय विधानसभा में 32 सदस्यों वाली भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार चला रहे हैं। इस बहुमत ने इनको शक्ति दी है। भाजपा के लोग चाहते हैं कि वह मिशनरियों के कुचक्र पर वार करें। बड़ी तैयारी करके बीरेन सिंह ने मणिपुर के पर्वतीय अंचलों में दबदबा बनाये मतान्तरित कुकी ईसाईयों को झटका दिया। राज्य की सरकारी मशीनरी के बूते इनके अफीम के कारोबार को रोकना शुरू किया। मणिपुर में मिशनरियों के बड़े बड़े ठिकानों में हड़कम्प मच गया। अफीम की खेती, कोकीन और हेरोइन के बड़े कारोबार पर यह गहरी चोट थी। मीडिया में इस बात को देश से छिपाया जाता है कि मणिपुर के उत्पात का वास्तविक कारण अफीम और मतान्तरण है। यह राज्य इस समय अफीम, हेरोइन और कोकीन के अन्तर्राष्ट्रीय अवैध धन्धे का बड़ा केन्द्र है। यहां के पहाड़ों के वनों को बिना रोकटोक के काटा गया । कुकी समुदायों को अफीम से अकूत कमायी होती रही। ऐसी खेती को राजनीति के सहारे फलने फूलने दिया गया।

अफीम और इसके उत्पादों को म्यांमार और असम के रास्ते विदेशों के साथ भारत में भी भेजा जाने लगा। कुकीज की लड़ाका वृत्ति को खूब प्रोत्साहित किया जाता रहा। इनके समूहों के आक्रामक शीर्ष लोगों ने

अत्याधुनिक आग्नेयास्त्र जुटाने शुरू किये। इन्हें रोकने की बात किसी ने नहीं की। उल्टे सरकारी तंत्र ने इसे इनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक बता कर स्वीकृति दे दी। एक बार तो कुकी समुदायों के कुछ बड़े नेताओं ने हल्ला मचा दिया कि बड़ी मात्रा में ऐसे आग्नेयास्त्र उनके ठिकानों से चोरी हो गये हैं । इनको शान्त करने के लिए राज्य की पुलिस के ऐसे शस्त्रास्त्र इनको देकर सन्तुष्ट कर दिया गया।

इस राज्य के मतान्तरित कुकी जो बहुधा ईसाई हैं तीव्र गति से धनी बनते गये। साथ ही आरक्षण के रास्ते सरकारी पदों पर जा बैठे। इससे 64 प्रतिशत मूल जनसंख्या यानि मैतेई समुदायों पर इनकी आक्रामकता बढ़ गयी। मणिपुर की मैतेई जनसंख्या चारों ओर पहाड़ों से घिरे समतलीय भूभाग में बसी है। यानी पर्वतों पर कुकी ईसाई और नीचे मैतेई। यहाँ के मुसलमान अभी तक कुकी से मिलकर मैतेई पर आक्रामक रहते थे। इनको पर्वतों पर अफीम की खेती की छूट थी। पर जाने क्या हुआ कि कुकी लोगों के झुण्ड मुसलमानों को पर्वतों से खदेड़ने लगे।

मणिपुर के मुख्यमन्त्री बीरेन सिंह को वैसे तो बहुत सधे पग बढ़ाने के लिए जाना जाता है। पर इस बार उनके निर्णय सभी को चौंका रहे हैं। वह फुटबॉल खिलाड़ी रहे हैं। 1961 में जन्मे बीरेन ने 2002 में राजनीति प्रारम्भ की । पहले निजी पार्टी फिर कांग्रेस के बाद 2016 में भाजपा में आ गये। उन्हें अमित शाह और असम के मुख्यमंत्री का मित्र कहा जाता है। मणिपुर में बीरेन सिंह ने पहले तो एक विधान बनाकर मैतेई समुदाय को भी जनजातीय घोषित करके कुकी जनजातीय समुदाय की बराबरी दे दी। इस निर्णय का विरोध उच्च न्यायालय में किया गया तो वहाँ कुकी हार गये। बीरेन को इससे बड़ी शक्ति मिली । पर अचानक कुकी समुदाय के हजारों लोग सड़कों पर उतर पड़े। इन समूहों की आक्रामकता इतनी रही कि दो दिन में मैतेई समुदाय के मन्दिरों, घरों, कारोबारी स्थानों को आठ जिलों में आग लगायी गयी। मैतेई लोग श्रीकृष्ण और रुक्मणी जी के उपासक हैं। मणिपुर के जातीय समुदाय महिलाओं की प्रधानता वाले हैं। लैंगिक अनुपात में पुरुष बहुत थोड़े अन्तर से आगे हैं। कुकी समुदायों ने मन्दिरों को तोड़ा तो पूरे मणिपुर में आक्रोश फैल गया। महिलाएं प्रतिकार की अग्नि में जल उठीं। वह रुक्मिणी जी और श्रीकृष्ण के अपमान को भला कैसे सहती। केन्द्र सरकार त्वरित कार्रवाई नहीं करती तो बहुत रक्त बहता। आक्रामकता की पहल करने वालों को मैतेई समुदाय के लोगों ने खदेड़ना शुरू कर दिया था।

स्वतन्त्रता के बाद कांग्रेस की सरकारों ने मिशनरियों के इस कुचक्र को खूब प्रश्रय दिया। यद्यपि महात्मा गाँधी ने स्वतन्त्रता से पूर्व ही मुखर होकर मिशनरियों को ऐसा पाप नहीं करने देने के लिए कहा था परन्तु उनकी बात कांग्रेसी सरकारों ने कभी नहीं मानी।

मणिपुरी मैतेई समुदाय के लोग नागदेव को संरक्षक मानते हैं। श्रीकृष्ण को प्रायः गोविन्द कहते हैं। रुक्मणी जी सहित विभिन्न देवताओं की स्थानीय नामों से आराधना करते हैं। इस तरह कई देवताओं के आराधक मैतेई अपनी संस्कृति से बहुत लगाव रखते हैं। इन पर भी मतान्तरण का कुचक्र चलाया जा रहा है। निर्धन मैतेई समुदाय को जाल में फँसाने के लिए धन की कमी नहीं पड़ती क्योंकि इसके लिए अफीम का मस्त कारोबार बड़े काम का है।

बीरेन सरकार ने जो निर्णय किया है उससे टकराव तो तय है। कुछ ठहराव की बात अलग है। पर अपने हठ से पीछे भला कौन हटे। पर्वतों के बहुमूल्य वृक्षों को अब और कटने नहीं देंगे। अफीम की खेती और तस्करी से मणिपुर की संस्कृति को हानि हो रही है। जो हिंसा करते हैं उनको सही रास्ता चुनना पड़ेगा। मैतेई समुदाय को आरक्षण और अन्य सुविधाएं मिलनी चाहिए। यह निश्चय मणिपुर सरकार के हैं। पर सरकार के भीतर से बाहर तक ईसाई और धनाढ्य कुकी अपने को किसी तरह कम नहीं मानते। उन्हें पर्वतीय भूभाग में मनमानी से रोका टोका नहीं जा सकता । ऐसा हुआ तो समस्या बढ़ेगी। यह कथन राज्य की मीडिया और नौकरशाही के एक बड़े वर्ग का है । ऐसे लोग कुकीज के गढ़ को अभेद्य मानते आ रहे हैं।

एक बात और कि म्यांमार से लगी पूर्वी सीमा उत्पाती समुदायों के लिए वरदान है। इस राज्य के उत्तर में नागालैण्ड, दक्षिण में मिजोरम है। दोनों राज्यों ने कुकी समुदायों के उत्पातियों को अपने यहाँ घुसने पर रोक लगा रखी है। असम से लगी पश्चिम की सीमा में भी यहाँ के उत्पाती नहीं जा सकते। पर म्यांमार इनके लिए स्वर्ग की देहरी है।

कुकी समुदाय की बस्तियां पहले म्यांमार क्षेत्र में भी थीं। 1826 में ब्रिटिश सरकार थी। अंग्रेजों ने तत्कालीन बर्मा सरकार से दो वर्ष युद्ध लड़ा। फिर 1826 में यण्डाबू गाँव में चतुर अंग्रेज लंदन से सन्धि के लिए पहुँचे । इन्होंने मूलतः भारत की 22 हजार किमी से अधिक भूमि बर्मा को दे दी। बदले में मणिपुर के अस्तित्व को बर्मा (अब म्यांमार) ने स्वीकार किया। यद्यपि 1886 में पूरे बर्मा पर अंग्रेज नियंत्रण कर ले गये। तो भी 1826 में सौंपा गया विशाल भूभाग स्वतन्त्रता के बाद अब तक मणिपुर को वापस नहीं मिला। कुकी समुदाय म्यांमार से नागालैण्ड होते मणिपुर के पर्वतों को काटकर बसता रहा। अब इनका संख्या बल, धनबल तथा प्रशासन में पकड़ तीनों बढ़ी है। इसलिए मणिपुर बड़ी समस्या के समाधान के लिए तड़प रहा है। राजधानी इम्फाल में भी हर समय तनाव बना रहता है। राज्य के 16 में से आठ जिलों में मतान्तरण के चलते कुकी और मिशनरियों की पकड़ गहरा रही है। इन्हीं आठ जिलों में मई 2023 के प्रथम सप्ताह में मैतेई समुदाय के लोगों और उनके देव मन्दिरों पर तेज आक्रमण किये गये। यह आक्रमण इतने हिंसक और सशस्त्र थे कि आक्रमण करने वाले तभी भागे जब स्थानीय मैतेई समुदाय और सरकार ने जोरदार प्रतिकार किया। केन्द्र सरकार ने भी त्वरित प्रतिक्रिया की। बीरेन सरकार को गृहमंत्री अमित शाह ने पूरे मन से सहायता पहुँचा कर डटने का साहस दिया। मणिपुर में शान्ति की कोई योजना तभी सफल हो सकती है जब विदेशों से प्रेरित और पोषित मिशनरियों को मतान्तरण से रोका जा सके। हिंसक कुकी समुदायों को निःशस्त्र करने के साथ वनों की कटाई बन्द करायी जाय। अफीम की खेती को किसी भी रीति से रोका जाय। इसके लिए कठोर निर्णय तो करने ही पड़ेंगे।

संवैधानिक मूल्यों को समृद्ध करेगा नया संसद भवन

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी
महानिदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान
नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 मई को संसद के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। भारत में संसद को लोकतंत्र का मंदिर कहा जाता है। लोकतंत्र में संसद का वही स्थान है, जो भारतीय संस्कृति में भगवान का है। हमारे संविधान निर्माताओं ने इसलिए कहा भी था कि लोकतंत्र में प्रत्येक विचार का केंद्र बिंदु संसद ही है और राष्ट्र निर्माण में उसकी अहम भूमिका है। लोकसभा तथा राज्यसभा, दोनों सदनों ने 5 अगस्त 2019 को सरकार से संसद के नए भवन के निर्माण के लिए आग्रह किया था। इसके बाद 10 दिसंबर 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद के नए भवन का शिलान्यास किया था। संसद के नवनिर्मित भवन को गुणवत्ता के साथ रिकॉर्ड समय में तैयार किया गया है। चार मंजिला संसद भवन में 1272 सांसदों के बैठने की व्यवस्था की गई है। संसद के वर्तमान भवन में लोकसभा में 550, जबकि राज्यसभा में 250 माननीय सदस्यों की बैठक की व्यवस्था है। भविष्य की जरूरतों को देखते हुए संसद के नवनिर्मित भवन में लोकसभा में 888, जबकि राज्यसभा में 384 सदस्यों की बैठक की व्यवस्था की गई है। दोनों सदनों का संयुक्त सत्र लोकसभा चेंबर में ही होगा। संसद सदस्यों के लिए एक लाउंज, एक पुस्तकालय, कई समिति कक्ष, भोजन क्षेत्र और पर्याप्त पार्किंग स्थान भी होगा। लेकिन आम नागरिकों के लिए जरूरी है कि वह लोकतंत्र में संसद की क्या भूमिका है, इसको भी समझें।

दुनिया में 13वीं शताब्दी में रचित मैग्ना कार्टा की बहुत चर्चा होती है। कुछ विद्वान इसे लोकतंत्र की बुनियाद भी कहते हैं। लेकिन बहुत कम लोग यह बात जानते हैं कि मैग्ना कार्टा से भी पहले 12वीं शताब्दी में ही भारत में भगवान बसवेश्वर का 'अनुभव मंटपम' अस्तित्व में आ चुका था। 'अनुभव मंटपम' के रूप में उन्होंने लोक संसद का न सिर्फ निर्माण किया था, बल्कि उसका संचालन भी सुनिश्चित किया था। भगवान बसवेश्वर जी ने कहा था - 'यी अनुभवा मंटप जन सभा, नादिना मट्टु राष्ट्रधा उन्नतिगे हागू, अभिवृध्दिगे पूरकावगी केलसा मादुत्थादे!' यानि ये अनुभव मंटपम, एक ऐसी जनसभा है, जो राज्य और राष्ट्र के हित में और उनकी उन्नति के लिए सभी को एकजुट होकर काम करने के लिए प्रेरित करती है। मुझे लगता है कि अनुभव मंटपम, लोकतंत्र का ही एक स्वरूप था। इसी तरह तमिलनाडु में चेन्नई से 80 किलोमीटर दूर उत्तरामेरुर नाम के गांव में एक बहुत ही ऐतिहासिक साक्ष्य दिखाई देता है। इस गांव में चोल साम्राज्य के दौरान 10वीं शताब्दी में पत्थरों पर तमिल में लिखी गई पंचायत व्यवस्था का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि कैसे हर गांव को कुडुंबु में बांटा जाता था, जिन्हें हम आज वार्ड कहते हैं। इन कुडुंबुओं से एक-एक प्रतिनिधि महासभा में भेजा जाता था और वैसा आज भी होता है। इस गांव में हजार वर्ष पूर्व जो महासभा लगती थी, वो आज भी वहां मौजूद है। एक हजार वर्ष पूर्व बनी इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक और बात बहुत महत्वपूर्ण थी। पत्थर पर लिखा हुआ है कि जनप्रतिनिधि को चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य घोषित करने का भी प्रावधान था। जो जनप्रतिनिधि अपनी संपत्ति का ब्योरा नहीं देगा, वो और उसके करीबी रिश्तेदार चुनाव नहीं लड़ पाएंगे। आप सोचिए कितने सालों पहले, कितनी बारीकी से उस समय हर पहलू के बारे में सोचा गया था, समझा गया था और अपनी लोकतांत्रिक परंपराओं का हिस्सा बनाया गया था। लोकतंत्र का हमारा ये इतिहास देश के हर कोने में नजर आता है। कुछ पुरातन शब्दों से तो हम बराबर परिचित हैं, जैसे सभा, समिति, गणपति, गणाधिपति। ये शब्दावली हमारे मन मस्तिष्क में सदियों से प्रवाहित है। सदियों पहले शाक्या, मल्लम और वेज्जी जैसे गणतंत्र हों, मल्लक मरक और कम्बोज जैसे गणराज्य हों या फिर मौर्य काल में कलिंग, सभी ने लोकतंत्र को ही शासन का आधार बनाया था। हजारों साल पहले रचित हमारे ऋग्वेद में लोकतंत्र के विचार को समज्ञान यानि समूह चेतना के रूप में देखा गया था।

संसदीय व्यवस्था में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच सतत संवाद, सहमति, सहयोग, सहकार, स्वीकार और सम्मान का भाव प्रबल होना ही चाहिए। यही लोकतंत्र की विशेषता है। इसी में संसदीय परंपरा की महिमा और गरिमा है। संभव है, इसे कुछ लोग कोरी राजनीति कहकर विशेष महत्व न दें, बल्कि सीधे खारिज कर दें, परंतु मूल्यों के अवमूल्यन के इस दौर में ऐसी राजनीति की महती आवश्यकता है। ऐसी राजनीति ही राष्ट्र-नीति बनने की संभावना रखती है। ऐसी राजनीति से ही देश एवं व्यवस्था का सुचारु संचालन संभव होगा। केवल विरोध के लिए विरोध की राजनीति से देश को कुछ भी हासिल नहीं होगा। विपक्ष को साथ लेना यदि सत्तापक्ष की जिम्मेदारी है, तो

विपक्ष की भी यह जिम्मेदारी बनती है कि वह राष्ट्रीय हितों के मुद्दों पर सरकार का साथ दे, सहयोग करे, जनभावनाओं की मुखर अभिव्यक्ति के साथ-साथ विधायी एवं संसदीय प्रक्रिया एवं कामकाज को गति प्रदान करे। लोकतंत्र में सरकार न्यासी और विपक्ष प्रहरी की भूमिका निभाए।

भारत की सबसे बड़ी ताकत इसकी सफल बहुदलीय संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली है। एक सजीव, गतिशील और बहुदलीय प्रणाली में ऐसे अवसर हो सकते हैं जब विभिन्न संस्थाएं एक विशेष तरीके से काम करें, किंतु हमारे पास व्यवस्था में किसी भी मनमुटाव को दूर करने और किसी भी संकट से बचने की क्षमता है। आप देखिए कि भारत की संसद अपनी प्रकृति और परंपरा में औरों से बिल्कुल अलग है। यहां प्रीति और कलह साथ-साथ चलते हैं। भारत की रीति-नीति-प्रकृति से अनजान व्यक्ति को संसद में होने वाली गर्मागर्म बहसों को देखकर अचानक लड़ाई-झगड़े का भ्रम हो उठेगा, परंतु ये चर्चाएं हमारे विचार विनिमय के जीवंत प्रमाण हैं। यहां मतभेद तो हो सकते हैं, पर मनभेद की स्थायी गांठ को कोई नहीं पालना चाहता और मतभेद चाहे विरोध के स्तर तक क्यों न चले जाएं, परंतु विशेष अवसरों पर साथ निभाना और सहयोग देना हमें बखूबी आता है।

मैग्ना कार्टा से भी पहले 12वीं शताब्दी में ही भारत में भगवान बसवेश्वर का 'अनुभव मंटपम' अस्तित्व में आ चुका था। 'अनुभव मंटपम' के रूप में उन्होंने लोक संसद का न सिर्फ निर्माण किया था, बल्कि उसका संचालन भी सुनिश्चित किया था।

यही वह संसद है, जिसमें अटल बिहारी वाजपेयी, ज्योतिर्मय बसु, मधु लिमये, पीलू मोदी, जगजीवन राम, चौधरी चरण सिंह, चंद्रशेखर, जॉर्ज फर्नांडीज, हेमवती नंदन बहुगुणा, नरसिंह राव, प्रणब मुखर्जी, सुषमा स्वराज जैसे दिग्गज सांसदों ने पक्ष-विपक्ष में रहकर आदर्श लोकतांत्रिक परंपरा को मजबूत किया और नैतिक मूल्यों और संस्कारों की रक्षा की। मान-मर्यादा हमारी परंपरा का सबसे मान्य, परिचित और प्रचलित शब्द है। हम अपने-पराए सभी को मुक्त कंठ से गले लगाते हैं, भिन्न विचारों का केवल सम्मान ही नहीं करते, अपितु एक ही परिवार में रहते हुए भिन्न-भिन्न विचारों को जीते-समझते हैं और विरोध की रौ में बहकर कभी लोक-मर्यादाओं को नहीं तोड़ते। यही भारत की संसद की रीति है, नीति है, प्रकृति है और संस्कृति है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि संसद का नवनिर्मित भवन भारत की गौरवशाली लोकतांत्रिक परंपराओं और संवैधानिक मूल्यों को और अधिक समृद्ध करने का कार्य करेगा। साथ ही अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त इस भवन में सदस्यों को अपने कार्यों को और बेहतर तरीके से करने में भी सहायता मिलेगी।

वरिष्ठ पत्रकार अशोक श्रीवास्तव का लन्दन में हुआ सम्मान

वरिष्ठ पत्रकार, डीडी न्यूज के प्रख्यात एंकर और संपादक अशोक श्रीवास्तव का लन्दन में हुआ सम्मान। ब्रिटेन की संसद के ऊपरी सदन हाउस ऑफ लॉर्ड्स में हुए एक कार्यक्रम में अशोक श्रीवास्तव को भारत गौरव स्वदेशी सम्मान से सम्मानित किया गया। हाउस ऑफ लॉर्ड्स में आयोजित एक कार्यक्रम में ब्रिटेन के सांसद राज लुम्बा ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। अशोक श्रीवास्तव को मीडिया के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए ये सम्मान दिया गया। गौरतलब है कि अशोक श्रीवास्तव करीब तीन दशक से पत्रकारिता के क्षेत्र में हैं और वर्तमान में डीडी न्यूज में वरिष्ठ संपादक के पद पर कार्यरत हैं और उनका डेली शो 'दो टूक' डीडी न्यूज का सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम है।

लन्दन में कांफ्लुएंस संस्था द्वारा आयोजित सम्मान समारोह कार्यक्रम की मुख्य अतिथि भारत की केन्द्रीय विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी थीं। कार्यक्रम में पूर्व सांसद और प्रतापगढ़ की राजकुमारी रत्ना सिंह के साथ चुनाव आयोग के पूर्व जॉइंट डायरेक्टर मोहम्मद आमीन को भी भारत गौरव स्वदेशी सम्मान से सम्मानित किया गया। ये सम्मान समारोह लन्दन में तीन दिन के भारत महोत्सव का मुख्य कार्यक्रम था। कांफ्लुएंस संस्था भारत की संस्कृति, कला और कलाकारों को दुनिया भर में मंच देने के लिए 5 सालों से लगातार अलग-अलग देशों में भारत महोत्सव का आयोजन कर रही है। इस भारत महोत्सव में अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाली विशिष्ट विभूतियों को स्वदेशी भारत गौरव सम्मान से सम्मानित किया जाता है।

विश्व में भारतीय मूल के नागरिकों की बढ़ती संख्या एवं सनातन दर्शन का प्रसार

प्रहलाद सबनानी
सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक
भारतीय स्टेट बैंक

भारतीय मूल के नागरिकों का भारत से पलायन प्रमुख रूप से तीन कालखंडों के दौरान हुआ है। प्रथम, वर्ष 1833 में भारतीय मूल के नागरिकों को बड़ी संख्या में (लगभग 15 लाख) दक्षिणी अमेरिका एवं केरिबियन देशों में श्रमिकों के तौर पर भेजा गया था। उस समय भारत पर ब्रिटेन का प्रशासन चल रहा था। अतः ब्रिटेन के प्रशासन द्वारा भारतीय मूल के नागरिकों को मॉरीशस, गयाना, त्रिनिदाद, टुबैगो, कैरेबियन देशों, फिजी, मलय पेनिनसुला, पूर्वी अफ्रीकी देशों एवं दक्षिणी अफ्रीकी देशों में भेजा गया था। इसी कालखंड में फ्रान्स प्रशासन द्वारा तमिलनाडु राज्य से कई भारतीय मूल के नागरिकों को रीयूनियन में भेजा गया था एवं पुर्तगाल प्रशासन द्वारा गोवा राज्य से कई भारतीय नागरिकों को मोजाम्बिक में भेजा गया था। उस कालखंड में ब्रिटेन, फ्रान्स एवं पुर्तगाल का इन राज्यों पर प्रशासन चल रहा था और इन देशों की पूरे विश्व में कई कोलोनियां थीं, जहां श्रमिकों के तौर पर नागरिकों की आवश्यकता थी। अतः भारतीय मूल के नागरिकों को उस खंडकाल में उक्त वर्णित देशों एवं अन्य कई देशों में भेजा गया था।

द्वितीय लहर के अंतर्गत वर्ष 1880 में कई भारतीय व्यापारी पूर्वी अफ्रीका एवं मध्य पूर्व के देशों में व्यापार करने की दृष्टि से वहां जाकर बस गए थे। विशेष रूप से गुजराती एवं सिंधी व्यापारी ओमान, दुबई, दक्षिणी अफ्रीका एवं पूर्वी अफ्रीका के देशों में जाकर बस गए थे। इसी के साथ पंजाबी, राजस्थानी, बलोची, सिंधी एवं कश्मीरी नागरिक आस्ट्रेलिया एवं कनाडा आदि देशों में जाकर बस गए थे।

वर्ष 1960–70 के कालखंड में जो तीसरी लहर प्रारम्भ हुई थी वह आज तक जारी है। इस दौर में उच्च तकनीकी क्षेत्र में उच्च शिक्षा एवं उच्च कौशल प्राप्त भारतीय मूल के नागरिक उत्तरी अमेरिका एवं यूरोप के विकसित देशों में जाकर बस गए थे। वर्ष 1970 के आसपास मध्य पूर्व के अरब देशों में कच्चे तेल की भारी मात्रा में

खोज हुई थी, इस कालखंड में भारतीय मूल के नागरिक भारी संख्या में अरब देशों में श्रमिकों के रूप में जाकर बस गए थे। आज भी प्रतिवर्ष 25 लाख से अधिक भारतीय मूल के नागरिक अन्य देशों में जाकर बस जाते हैं, जो पूरे विश्व में अन्य देशों के मुकाबले में सबसे बड़ी संख्या है।

आज भारतीय मूल के 320 लाख से अधिक नागरिक विश्व के विभिन्न देशों में निवास कर रहे हैं। इनमें 140 लाख भारतीय नागरिक प्रवासी भारतीय के रूप में इन देशों में निवास कर हैं एवं शेष 180 लाख भारतीय मूल के रूप में इन देशों के नागरिक बन चुके हैं। कुल मिलाकर 146 से अधिक देशों में भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं। कई देशों में तो भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या आज भारी तादाद में हो गई है। ओमान, सेंट विन्सेंट, कुवैत, सूरीनाम, रीयूनियन फ्रान्स में भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या इन देशों की कुल जनसंख्या का 20 से 30 प्रतिशत के बीच है। इसी प्रकार, युनाईटेड अरब अमीरात, फिजी, त्रिनिदाद एवं टोबेगो, गयाना एवं मॉरीशस में भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या लगभग 40 प्रतिशत है। मॉरीशस में तो लगभग 70 प्रतिशत भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं। बल्कि, कुछ देशों, जैसे, युनाईटेड अरब अमीरात, यमन, वेनेजुएला में तो स्थानीय मूल के नागरिकों से अधिक भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या हो गई है। मलेशिया में मलाया और चीनी के बाद तीसरा सबसे बड़ा जातीय समूह तमिल भाषाईयों

का है जो वहां की कुल जनसंख्या का 8 प्रतिशत है। अमेरिका के न्यू जर्सी राज्य में तीसरी भाषा के रूप में गुजराती भाषा को मान्यता प्रदान की गई है।

पूर्वी अफ्रीकी देशों में 20 लाख से अधिक भारतीय मूल के नागरिक रहते हैं। ये देश हैं, कीनिया, युगांडा, तजानिया, मोजाम्बिक, घाना, मेडागास्कर। इसी प्रकार, केरेबियन देशों में बहुत बड़ी संख्या में भारतीय मूल के नागरिक रह रहे हैं। गयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टुबैगो में भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या सबसे अधिक है। जमैका, सेंट विन्सेंट में भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या दूसरे नम्बर पर है। इसके साथ ही, बहामास, बारबाडोस, बेलीज, फ्रेंच गयाना, पनामा, ग्रेनाडा, ग्वाटेमाला, मैंटलूसिया, हैती, मार्टिनिक, ग्वाडेलोप में भी भारतीय मूल के नागरिक बड़ी संख्या में रहते हैं। साथ ही, फिलिपीन, जापान, सिंगापुर, नेपाल, म्यांमार में भी बड़ी संख्या में भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं। इसी प्रकार, इंडोनेशिया में भी कई शताब्दियों से भारतीय मूल के नागरिक रह रहे हैं। सनातन हिंदू धर्म का प्रचार प्रसार इंडोनेशिया में बहुत अधिक हुआ है। बाली की 87 प्रतिशत जनसंख्या हिंदू धर्म की अनुयायी है। अभी इंडोनेशिया में 1.25 लाख से अधिक भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं। इन देशों में भारतीय मूल के नागरिक उद्योग, व्यापार एवं अन्य क्षेत्रों की गतिविधियों में अपना योगदान देकर इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं को आगे बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय मूल के नागरिकों द्वारा भारतीय सनातन दर्शन को पूरे विश्व को देने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि पूरे विश्व में शांति स्थापित की जा सके।

उक्त देशों के अतिरिक्त विकसित देशों में भी भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। उत्तरी अमेरिका के कनाडा में 15 लाख से अधिक भारतीय मूल के नागरिक निवासरत हैं, जो कुल जनसंख्या का 4 प्रतिशत हैं। ब्रिटिश कोलम्बिया की कुल जनसंख्या का 5 प्रतिशत हिस्सा भारतीय मूल के नागरिकों का है। प्रतिवर्ष लगभग 85,000 भारतीय मूल के नागरिकों को कनाडा में स्थायी निवास की अनुमति मिल रही है एवं लगभग 2 लाख से अधिक भारतीय उच्च शिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष विदेश जाते हैं। अमेरिका में 40 लाख से अधिक भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं जो अमेरिका की कुल जनसंख्या का लगभग 1.2 प्रतिशत है। अमेरिका में प्रतिवर्ष 80 प्रतिशत से अधिक एच 1 बी वीजा भारतीय मूल के नागरिकों को प्रदान किए जा रहे हैं। वर्ष 2016 में आस्ट्रेलिया में 11.31 लाख भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे थे जो आस्ट्रेलिया की कुल जनसंख्या का 4.7 प्रतिशत है। वर्ष 2011 के उपलब्ध आकड़ों के अनुसार, ब्रिटेन में भारतीय मूल के 14.5 लाख नागरिक निवासरत थे, जो ब्रिटेन की कुल जनसंख्या का 2.3 प्रतिशत हिस्सा हैं। सिंगापुर में भारतीय मूल के नागरिकों की कुल 7 लाख से अधिक की संख्या, चीन एवं मलाया के बाद तीसरे स्थान पर है और यह सिंगापुर की कुल जनसंख्या का 9 प्रतिशत है।

भारत के बाद जिन अन्य देशों से बहुत बड़ी संख्या में नागरिक अन्य देशों में बस गए हैं उनमें रूस, मैक्सिको, चीन एवं सीरिया शामिल हैं। रूस एवं मेक्सिको से 1.1 करोड़ से अधिक नागरिक, चीन से एक करोड़ से अधिक नागरिक एवं सीरिया से 80 लाख से अधिक नागरिक दूसरे देशों की नागरिकता प्राप्त कर चुके हैं। मैक्सिको के 98 प्रतिशत नागरिकों ने अमेरिका की नागरिकता ली हुई है। सीरिया के 45 प्रतिशत नागरिकों ने टर्की की नागरिकता ली हुई है। जबकि भारतीय मूल के नागरिक पूरे विश्व में फैले हुए हैं। सबसे अधिक लगभग 35 लाख से अधिक भारतीय नागरिकों ने यूनाइटेड अरब अमीरात में नागरिकता ली हुई है जो भारत से कुल बाहर गए नागरिकों का 19 प्रतिशत है। अमेरिका में 27 लाख से अधिक भारतीय मूल के नागरिकों ने नागरिकता ली हुई है, साऊदी अरब में 25 लाख से अधिक भारतीयों ने नागरिकता ली है। इसी प्रकार, आस्ट्रेलिया, कनाडा, कुवैत, ओमान, कतर, ब्रिटेन जैसे देशों में बहुत बड़ी संख्या में भारतीयों ने नागरिकता प्राप्त की है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व की कुल जनसंख्या का 3.6 प्रतिशत नागरिक विभिन्न देशों में जाकर बस गए हैं। अमेरिका में सबसे अधिक 5.1 करोड़ नागरिक अन्य देशों से आकर बस गए हैं। जो अमेरिका की कुल जनसंख्या का 16 प्रतिशत है। जर्मनी में 1.6 करोड़ से अधिक नागरिक अन्य देशों से आकर बस गए हैं। साऊदी अरब में 1.3 करोड़ से अधिक नागरिक रूस में 1.2 करोड़ से अधिक नागरिक एवं ब्रिटेन में 90 लाख से अधिक नागरिक अन्य देशों से आकर बस गए हैं।

आज विश्व के लगभग 50 से अधिक देशों में भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या प्रभावशाली स्तर पर पहुंच गई है। अब समय आ गया है कि इन देशों में निवास कर रहे भारतीय मूल के नागरिकों द्वारा भारतीय सनातन दर्शन को पूरे विश्व को देने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि पूरे विश्व में शांति स्थापित की जा सके। भारत में भी इस सम्बंध में गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिए कि किस प्रकार इन देशों में निवास कर रहे भारतीय मूल के नागरिकों के माध्यम से भारतीय सनातन दर्शन को विस्तार देने का कार्य किया जा सकता है। आज दरअसल विश्व के लगभग सभी देश आतंकवाद एवं पूंजीवाद के चलते निर्मित हुई विपरीत परिस्थितियों से त्रस्त हैं एवं इन देशों के नागरिक इन परेशानियों से छुटकारा पाना चाहते हैं जो कि केवल भारतीय सनातन दर्शन में ही सम्भव दिखाई देती है।

ऑपरेशन कावेरी : भारतीय वायुसेना सिर्फ आक्रमण नहीं बचाव भी जानती है

रुद्र प्रताप दुबे
लेखक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषय

अब जबकि भारत ने सूडान में फंसे नागरिकों को निकालने के लिए शुरू किये गए 'ऑपरेशन कावेरी' अभियान को 5 मई को समाप्त कर दिया है, तब सबसे बेहतर समय है इस अभियान की समीक्षा करने का कि वास्तव में इस पूरे अभियान ने भारत को क्या दिया है।

पहले हम ये जान लेते हैं कि सूडान में रह रहे ज्यादातर भारतीय आयुर्वेदिक दवा बेचने का काम करते हैं, इनमें से अधिकांश लोग जड़ी- बूटी से लेकर पेड़-पौधों से दवा बनाने का काम बखूबी जानते हैं। सूडान में कर्नाटक के हक्की पिक्की जनजाति समुदाय के लोग आयुर्वेदिक दवाओं के उत्पादन को अफ्रीकी देशों में बेचते हैं। सूडान के लोग भारतीयों को विश्वसनीय मानते हैं और उन्हें भारतीय मेडिकल साइंस और आयुर्वेद पर पूरा भरोसा है। सूडान की जलवायु ऐसी है कि वहाँ पर अक्सर हैजा, हेपेटाइटिस, बुखार जैसी गंभीर बीमारियों फैलती रहती है और ऐसे में भारतीय आयुर्वेदिक दवाइयां और जड़ी बूटियां उनके लिए वरदान साबित होती हैं।

अब बात ऑपरेशन कावेरी की, ये अभियान तब शुरू हुआ जब भारत को सूडान में सेना और अर्द्धसैनिक बल के बीच हिंसक झड़पों के बाद बिगड़ती स्थितियों की वजह से वहां से अपने नागरिकों को निकालना जरुरी हो गया था। इस गृह युद्ध के चलते सैकड़ों लोग मारे गए तथा हजारों लोग घायल हुए हैं। 24 अप्रैल को भारत सरकार ने ऑपरेशन कावेरी शुरू किया। इस ऑपरेशन के समन्वय के लिए अधिकारियों की एक टीम तैनात की गई जिसमें विदेश मंत्रालय, सूडान में भारतीय दूतावास और भारतीय वायु सेना के अधिकारी शामिल किये गए।

सूडान में लड़ाई शुरू होते ही भारतीय दूतावास वहां रहने वाले भारतीयों के संपर्क में आ गया। दिल्ली में भी एडवाइजरी जारी की गई। वहां रह रहे भारतीयों को एक कम्युनिकेशन नेटवर्क से जोड़कर ऑपरेशन कावेरी और भारत सरकार के प्रयासों के बारे में जानकारी दी गई फिर दूतावास ने भारतीय के आनलाइन रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू की। सूडान का एयरस्पेस बंद था, इसलिए वहां से भारतीयों या दूसरे विदेशी नागरिकों को निकालना संभव नहीं हो पा रहा था इसलिए ये तय हुआ कि निकासी अभियान में सूडान के विभिन्न हिस्सों से भारतीय नागरिकों को पहले राजधानी खार्तूम तक पहुँचाया जायेगा फिर उन्हें विशेष उड़ानों से भारत वापस लाया जायेगा।

ऑपरेशन में भारतीय नौसेना के आईएनएस सुमेधा, स्टील्थ गश्ती पोत और जेद्दा में स्टैंडबाय पर दो भारतीय वायु सेना के विशेष संचालन विमान की तैनाती की गयी। ऑपरेशन कावेरी में इंडियन नेवी के पांच जहाजों और इंडियन एयरफोर्स के 16 विमानों का इस्तेमाल किया गया है। अभियान के अंतर्गत जेद्दा के एक स्कूल में सुविधा कैंप को भी बनाया गया।

चूँकि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से ऐसे कई मिशन को सफलता पूर्वक पूरा किया गया था इसलिए भारतीय वायुसेना आश्वस्त थी कि अगर बेहतर समन्वय के साथ इस ऑपरेशन को किया गया तो वो पुनः हर भारतीय की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित कर देगी।

कुछ सफल ऑपरेशन :-

1. ऑपरेशन गंगा (2022) : यह उन सभी भारतीय नागरिकों को वापस लाने का मिशन था जो यूक्रेन में फंसे थे।

2. ऑपरेशन देवी शक्ति (2021) : ऑपरेशन देवी शक्ति तालिबान द्वारा अपने तेजी से अधिग्रहण के बाद काबुल से अपने नागरिकों और अफगान भागीदारों को निकालने के लिए भारत का जटिल मिशन था।

3. वंदे भारत (2020) : जब दुनिया भर में कोविड-19 महामारी का प्रकोप हुआ, तो केंद्र ने विदेशों में फंसे भारतीय नागरिकों को वापस लाने के लिए वंदे भारत मिशन शुरू किया।

4. ब्रूसेल्स से निकासी (2016) : मार्च 2016 में, बेल्जियम जर्वेंटेम में ब्रसेल्स हवाई अड्डे पर और मध्य ब्रसेल्स में मालबीक मेट्रो स्टेशन पर आतंकवादी हमलों से प्रभावित हुआ था।

5. ऑपरेशन राहत (2015) : 2015 में, यमनी सरकार और हौथी विद्रोहियों के बीच संघर्ष हुआ।

6. ऑपरेशन मैत्री (2015) : यह 2015 के नेपाल भूकंप के बाद के झटकों में भारत सरकार और भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा एक संयुक्त राहत और बचाव अभियान था।

ऐसे समय जब भारतीय वायुसेना अपने सबसे मजबूत दौर में है और 2032 तक अपनी लड़ाकू क्षमता को 32 स्क्वाड्रन करना चाहती है और पांचवीं पीढ़ी के फाइटर जेट AMCA के लिए तैयार है, उस वक्त वायुसेना द्वारा ऑपरेशन कावेरी जैसे कई सफल अभियानों को निरंतर अंजाम देना इस बात की गवाही देता है कि भारतीय सेना सम्पूर्ण विश्व में अपने मजबूत नेतृत्व और रणनीतिक कौशल की वजह से सम्मान पा रही है।

विश्व पर्यावरण दिवस

सतीश शर्मा
संघचालक, केशव भाग, नोएडा
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

भूमि जल वायु जीव जंतु और वनस्पतियों के रूप में बाह्य पर्यावरण और आस्था के रूप में आंतरिक पर्यावरण दोनों ही परमात्मा के बनाए हुए हैं उनकी एकात्मता को समझा जाना चाहिए। भूमि जलवायु वनस्पति और जीव जंतु के रूप में हमारे सामने उपस्थित प्राकृतिक जगत को जिसमें हम आव्रत हैं, जो हमारे मनुष्य जीवन के चारों ओर विद्यमान हैं पर्यावरण कहते हैं। प्रदूषण बढ़ने के कारण खंडित यांत्रिक दृष्टि, प्रकृति का शोषण, विकास का गलत अर्थ याने अधिकाधिक उत्पादन व अधिकाधिक उपभोग, त्रुटिपूर्ण उत्पादन तंत्र व उत्पादन तकनीकी, परमाणु ऊर्जा निर्माण, परिवहन, वनों की अन्धाधुन्ध कटाई, फैशन, पैकेजिंग, प्रचार और वर्तमान स्वरूप, दोषपूर्ण जीवनशैली व उपयोग शैली इस कारण भूमंडलीय तापमान में वृद्धि, ओजोन परत में छेद, अम्लवर्षा, सागरीय प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन के परिणाम दिखने लगे।

विश्व पर्यावरण दिवस (W.E.D.) की स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा (U.N.G.A.) द्वारा 5 जून, 1972 को स्वीडन के स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में की गई थी। इसका उद्देश्य पारिस्थितिक तंत्र के क्षरण को रोकना और वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्हें बहाल करना है। केवल स्वस्थ पारिस्थितिक तंत्र के साथ ही हम लोगों की आजीविका को बढ़ा सकते हैं, जलवायु परिवर्तन का प्रतिकार कर सकते हैं और जैव विविधता के पतन को रोक सकते हैं। तेजी से बढ़ती प्रजातियों के नुकसान और प्राकृतिक दुनिया के क्षरण से निपटने के लिए कार्रवाई का आह्वान करना होगा । प्रथम विश्व पर्यावरण दिवस 1973 में मनाया गया था। पर्यावरण की रक्षा और विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से निपटने के लिए सार्वजनिक स्तर और व्यक्तिगत स्तर पर बहुत कुछ किया जा सकता है। जब भी संभव हो हमें अपने पानी की खपत को कम करना चाहिए हमें पुनः प्रयोज्य शॉपिंग बैग ले जाना चाहिए और प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग करने से बचना चाहिए। पेड़ लगाने और टिकाऊ रोशनी का उपयोग करने से हमारे पर्यावरण में बड़ा अंतर आ सकता है। उद्योगों पर लगाम लगाई जानी चाहिए, ताकि वे हानिकारक रसायनों को हमारे कीमती जलस्रोतों में न फेंके।

"अश्वत्थमेकं पिचुमिन्दमेकं न्यग्रोधमेकं दश पुष्पजाति द्वे द्वे, तथा दाड़िम मातुलुंगे पञ्चाम्ररोपी नरकं न याति" अर्थ - "एक पीपल, एक नीम, एक बरगद, दस फूलों के पौधे, दो दो अनार के वृक्ष तथा पाँच आम और नारंगी के वृक्ष लगाने वाला मनुष्य नरक नहीं जाता.." हजारों वर्ष पुराने, हमारे पुराण में यह श्लोक कितनी दूर दृष्टि के साथ लिखा गया होगा यह विचारने योग्य बात है। यह श्लोक आज के प्रदुषण पीड़ित माहौल में कितना प्रासंगिक बैठता है यह हम सभी भलीभांति जानते हैं। वनस्पति वैज्ञानिक शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि पीपल, नीम, बरगद आदि ऐसे वृक्ष हैं जो बहुतायत में ऑक्सीजन की मात्रा छोड़ते हैं।

क्या आपको पता है कि अगले 40–50 वर्षों बाद हमारी सारी खेती योग्य भूमि बंजर हो जाएंगी? रिसर्च कहता है कि खेती करने के लिए भूमि में मिनिमम 3 प्रतिशत ऑर्गेनिक कंटेन्ट होने चाहिए दुनिया के अलग अलग हिस्सों में यह 1 से लेकर 3 प्रतिशत तक है। वहीं भारत में मात्र 0.5 प्रतिशत बचा है। प्रति सेकंड विश्व में 1 एकड़ जमीन बंजर हो रही है तो आप इससे गणना कर लीजिए कि हम कितनी तीव्र गति से विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। दुनिया में जहाँ 52 प्रतिशत खेती योग्य भूमि बंजर हो चुकी है तो भारत में यह आंकड़ा 60

प्रतिशत है। ऊपर से जंगलों की अंधाधुंध कटाई, नदियों का क्षरण भूमि से जितने ऑर्गेनिक कंटेंट समाप्त होते जाएंगे भूमि का जलस्तर उतना गिरता जाएगा जब भूमि में नमी ही नहीं बचेगी तो हरियाली कहाँ से आएगी?

स्थिति इतनी भयावह है। जग्गी वासुदेव की SaveSoil मुहीम के बारे में आज डिटेल में पढ़ा तो मेरी आँखें फटी रह गईं। हम आज भी न चेते तो हमारी आने वाली पीढ़ी भूख से मरेगी इसे टालने का एक मात्र उपाय है संसाधनों का सीमित उपयोग, पेड़ लगाना, केमिकल और फर्टिलाइजर को तिलांजलि देना गाय, भैंस आदि पालिये, उनके गोबर, मूत्र और प्राकृतिक खाद का प्रयोग कीजिये केंचुआ पालन कीजिये तो शायद स्थिति नियंत्रण में आये लेकिन एक या दो लोगों के प्रयास से नहीं होगा प्रत्येक व्यक्ति को इसका ध्यान रखना होगा, लोगों को जगाना होगा अपने लिए न सही अपने बच्चों से तो सभी को प्यार होगा न तो उन्हें शुद्ध भोजन और जल मिलता रहे ये हम नहीं सोचेंगे तो भला कौन सोचेगा।

आगामी वर्षों में प्रत्येक 500 मीटर के अंतर पर यदि एक एक पीपल, बड़, नीम आदि का वृक्षारोपण किया जाए, तभी अपना भारत देश प्रदूषणमुक्त होगा।

पर्यावरण को हम मनुष्य जितनी हानि पहुंचा सकते थे पहुँचा चुके हैं। अब प्रकृति हमें नुकसान पहुंचा रही है। आज से सौ वर्ष पहले किसी भी फल में जितने अधिकतम न्यूट्रिशन्स होते थे उसका 10 प्रतिशत भी उनमें आज शेष नहीं बचा आप संतरे को ले लीजिए उसमें पहले यदि 100 प्रतिशत न्यूट्रिशन होते थे तो आज मात्र 10 प्रतिशत बचा है मतलब आप आज 100 संतरे खा लीजिये और आज से 100 वर्ष पहले का 1 संतरा बराबर था।

पर्यावरण की रक्षा हेतु बरसात के पानी को बचाए, नदी को बचाए, अधिक पेड़ लगाए, कौन-कौन से पेड़ लगाएं कि ज्यादा लाभ हो और मेहनत सही दिशा में हो। इस संदर्भ में स्कंदपुराण में लिखा है -

अश्वत्थमेकम् पिचुमन्दमेकम् न्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चिणीकान्।
कपित्थबिल्वाऽऽमलकत्रयञ्च, पञ्चाऽऽम्रमुप्त्वा नरकन्न पश्येत्।।

अश्वत्थः = पीपल 100 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है, पिचुमन्दः नीम 80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है न्यग्रोधः वटवृक्ष 80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है चिञ्चिणी इमली 80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है कपित्थः कविट 80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है बिल्वः बेल 85 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है आमलकः आवला 74 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है आम्रः आम 70 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है, उप्ति = पौधा लगाना,जो कोई इन वृक्षों के पौधो का रोपण करेगा, उनकी देखभाल करेगा उसे नरक के दर्शन नही करना पड़ेंगे। इस सीख का अनुसरण न करने के कारण हमें आज इस परिस्थिति के स्वरूप में जलवायु परिवर्तन के दर्शन हो रहे हैं। अभी भी कुछ बिगड़ा नही है, हम अभी भी अपनी गलती सुधार सकते हैं। और गुलमोहर, निलगिरी जैसे वृक्ष अपने देश के पर्यावरण के लिए घातक हैं उनका ज्यादा रोपण ना करे। पश्चिमी देशों का अंधानुकरण कर हम ने अपना बड़ा नुकसान कर लिया है। पीपल, बड और नीम जैसे वृक्ष रोपना बंद होने से सूखे की समस्या बढ़ रही है। ये सारे वृक्ष वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाते है। साथ ही, धरती के तापनाम को भी कम करते है। हमने इन वृक्षों के पूजने की परंपरा को अन्धविश्वास मानकर फटाफट संस्कृति के चक्कर में इन वृक्षो से दूरी बना ली। शास्त्रों में पीपल को वृक्षों का राजा कहा गया है। क्योकि पीपल 24 घन्टे आक्सीजन देता है।

प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति के अनुसार पृथ्वी पर ऐसी कोई भी ऐसी वनस्पति नहीं है, जो औषधि न हो। घरों में तुलसी के पौधे लगाने होंगे। आगामी वर्षों में प्रत्येक 500 मीटर के अंतर पर यदि एक एक पीपल, बड़, नीम आदि का वृक्षारोपण किया जाए, तभी अपना भारत देश प्रदूषणमुक्त होगा। हम अपने संगठित प्रयासों से ही अपने 'भारत' को नैसर्गिक आपदा से बचा सकते हैं। भविष्य में भरपूर मात्रा में नैसर्गिक ऑक्सीजन मिले इसके लिए आज से ही अभियान आरंभ करने की आवश्यकता है। आइए हम पीपल, बड़, बेल, नीम, आंवला, जामुन व आम आदि वृक्षों को लगाकर आने वाली पीढ़ी को निरोगी एवं 'सुजलां, सुफलां पर्यावरण' देने का प्रयत्न करें।

जून डायरी

2 **जून** (**ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी**)	**हिन्दू साम्राज्य दिवस**
4 **जून**	**चीन - थियानमेन चौक नरसंहार**
4 **जून** (**ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा**, **वि. संवत** 1456)	**कबीरदास जयंती**
5 **जून**	**विश्व पर्यावरण दिवस**
9 **जून**, 1900	**बिरसा मुंडा (बलिदान दिवस)**
18 **जून**, 1858	**रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस**
23 **जून** ,1953	**डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस**
25 **जून** ,1975	**आपातकाल**
28 **जून** (**आषाढ़ शुक्ल दशमी**,1905)	**लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी) जयंती**

केरल की कहानी मानवता को चेतावनी

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
ब्लॉगर एवं शिक्षाविद

कई राजनेताओं, कम्युनिस्ट नेताओं और उनके समर्थकों ने लंबे समय से मानवता और मानवाधिकारों को महत्व नहीं दिया है। एक मानसिकता जो स्वार्थी कारणों से दूसरों की बर्बादी पर पनपती है। इस जहरीली मानसिकता ने बच्चों और महिलाओं सहित अनगिनत लोगों की जान ले ली है।

इससे भी बदतर, जो लोग इन अमानवीय प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं और बनाए रखते हैं, वे खुद को मानव जाति के रक्षक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में अल्पसंख्यकों (हिंदुओ जिनमे जैन, सिख, बौद्ध और ईसाई) का शोषण और लगभग विलुप्त होने के कुछ सबसे खराब मानवीय मुद्दे हैं, दुनिया भर में इस्लामिक राज्य शासन लाने में आईएसआईएस की क्रूरता, चीन में अल्पसंख्यकों का शोषण चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा, उत्तर कोरिया की कम्युनिस्ट आधारित तानाशाही, बोको हराम, धर्मांतरण रैकेट और ऐसी कई अन्य अमानवीय गतिविधियां दुनिया के बड़े हिस्से में हो रही हैं।

हमें सभी का सम्मान करना चाहिए, सनातन धर्म के सिद्धांतों को बच्चों को सिखाना चाहिए ताकि वे अलग अलग भगवान के नाम पर गुमराह न हों और अपने जीवन को नष्ट न करें।

इन अमानवीय गतिविधियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कौन प्रायोजित कर रहा है? क्या यह आर्थिक महाशक्ति अमेरिका, चीनी सरकार, कुछ यूरोपीय देशों और तुर्की जैसे देशों द्वारा वर्षों से प्रायोजित नहीं है? इससे भी बदतर, ये देश भारत में मानवाधिकारों पर सवाल उठा रहे हैं, जहां अल्पसंख्यकों के साथ निष्पक्ष व्यवहार किया जाता है और बहुसंख्यक हिंदुओं का भारी समर्थन मिलता है, लेकिन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई राजनेताओं और कम्युनिस्ट अनुयायियों के स्वार्थी, संपत्ति और राजकीय शक्ति उन्मुख एजेंडे ने मानव अधिकारों को अमानवीय बना दिया है। इस तरह की मानसिकता और कार्यप्रणाली के नतीजे विनाशकारी हैं, जैसा कि 'लव जिहाद,' 'भूमि जिहाद', आतंकवाद और एक विचारधारा जो पूरे विश्व को एक धर्म में बदलने की कोशिश करती है। क्या यह सच है कि 'लव जिहाद' के कृत्य का इस्लामिक आतंकी संगठनों में भर्ती करने और सेक्स ट्रैफिकिंग से लेकर भारत की जनसांख्यिकी को बदलने तक के उद्देश्यों के लिए कथित रूपांतरण रणनीति के लिए शॉर्टहैंड के रूप में तेजी से इस्तेमाल किया जा रहा है?

'कश्मीर फाइल्स' या 'द केरल स्टोरी' का उद्देश्य लोगों के दिमाग में जहर घोलना और समाज में अशांति पैदा करना नहीं है, बल्कि समाज में जागरूकता बढ़ाना, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को सबसे खराब वास्तविकता से अवगत कराना और समय पर कार्रवाई होना उद्देश्य है। यह एक अलग तरह का आतंकवाद दुनिया के हर हिस्से में अपने पैर पसार रहा है। फिल्म को रिलीज करने की अनुमति देने के उनके फैसले के लिए हम उच्च और सर्वोच्च न्यायालयों के आभारी हैं। इसे केवल एक धार्मिक समस्या के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि कुछ राजनीतिक वर्ग, धर्मांतरण माफियाओं और साम्यवाद के कई अनुयायियों द्वारा मानवता पर हमले के रूप में देखा जाना चाहिए।

कम्युनिस्टों को 'द केरला स्टोरी' जरूर देखनी चाहिए और 'गीतांजलि' नाम की लड़की को सुनना चाहिए जब उसने अपने कम्युनिस्ट माता-पिता से सवाल किया कि उन्होंने उसे सनातन धर्म, उत्सवों और सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में क्यों नहीं सिखाया, जब उसे 'लव जिहाद' विकृति के बारे में समझ आया और तब तक उसने अपना जीवन बर्बाद कर लिया था। कम्युनिस्टों को धर्म और रिलीजन के बीच के अंतर को पहचानना चाहिए। हालाँकि हमें सभी का सम्मान करना चाहिए, सनातन धर्म के सिद्धांतों को बच्चों को सिखाना चाहिए ताकि वे अलग अलग भगवान के नाम पर गुमराह न हों और अपने जीवन को नष्ट न करें। हिंदू या सनातन एक धर्म है, रिलीजन नहीं जो लोगों को किसी विशेष देवता की पूजा करने के लिए मजबूर नहीं करता और नास्तिकों को भी पूरी तरह से स्वीकार करता है। इसके विपरीत, कुछ रिलीजन का मानना है कि उनका मार्ग ही एकमात्र मार्ग है और सभी को इसका पालन करना चाहिए या उनके भगवान से दंड का सामना करना चाहिए। केवल सच्ची शांति तभी होगी जब इन रिलीजन के विशेषज्ञ सभी धर्मों की सराहना करेंगे और अपने समुदायों को विविधता, संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करना सिखाएंगे। क्या सनातन धर्म के निंदक यह स्थापित कर सकते हैं कि भारत ने किसी देश को निशाना बनाया और भूमि, संसाधन, संस्कृति और पूजा स्थलों को नष्ट कर दिया, धर्म परिवर्तित कर दिया और

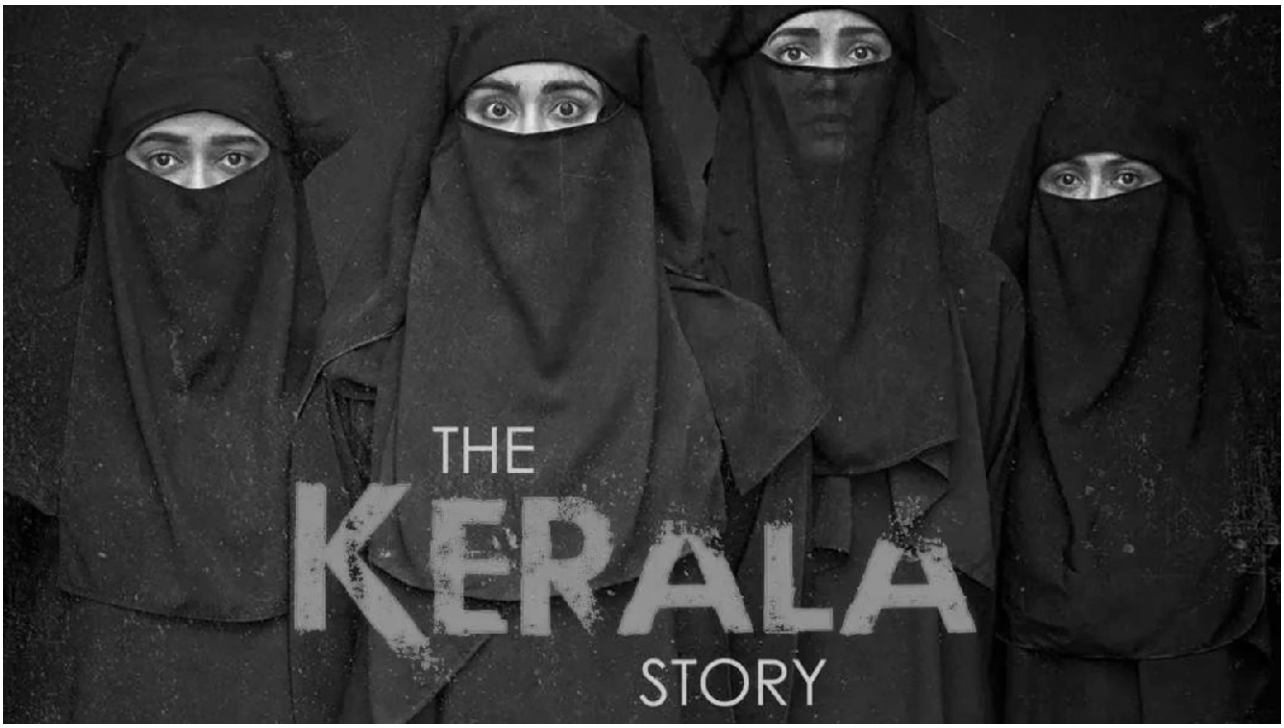

विशाल धन को लूट लिया? हालांकि, हमारे महान राष्ट्र के साथ यह कई सदियों से हो रहा है, और सनातन अनुयायियों ने कभी भी हड़पने या लूटने का प्रतिकार नहीं किया है। हालाँकि, कई राजनीतिक नेताओं और कम्युनिस्टों ने सनातन धर्म को घृणा से निशाना बनाना जारी रखा है, और हम जो कुछ भी कश्मीर, केरल या अन्य हिस्सों में अनुभव कर रहे हैं, वह केवल इसी मानसिकता का परिणाम है।

मानवाधिकार आयोग, न्यायपालिका और अमेरिका, कुछ यूरोपीय देशों और चीन के नागरिकों को उनकी सरकारो से सवाल करना चाहिए कि वे अपने ही देश में मानवाधिकार सिद्धांतों का पालन क्यों नहीं करते हैं, लेकिन असामाजिक तत्वों को हथियार और गोला-बारूद देकर, बड़े पैमाने पर वित्तीय और सैन्य सहायता प्रदान करके अन्य देशों को कमजोर करना क्यो चाहते है? भारत में मानवाधिकारों पर सवाल उठाते हुए अमेरिकी प्रशासन अपने देश में काले और गोरे में भेदभाव को कैसे भूल जाता है? सनातन धर्म के कट्टर अनुयायी और हमारे प्रधानमंत्री ही हैं, जिन्होंने बिना धर्म और देश देखे युद्धग्रस्त सीरिया, यमन और सूडान से हजारों शरणार्थियों को बचाया है। यही मानवता का सार है।

अगर हम अपने भाइयों और बहनों के खिलाफ हुए अपराधों के खिलाफ चुप रहते हैं, तो अफगानिस्तान, कश्मीर और केरल केवल हिमशैल की नोक हैं। निकट भविष्य में, मानवता पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी, और आतंकवादी विश्व पर शासन करेंगे। कई भारतीय राजनेताओं, कम्युनिस्टों और विदेशी-वित्तपोषित कार्यकर्ताओं को यह स्वीकार करना चाहिए कि यदि वे असामाजिक तत्वों का समर्थन करना जारी रखते हैं और सनातन धर्म के प्रति गहरी घृणा रखते हैं तो सत्ता हासिल करने और किसी भी तरह से धन संचय करने का उनका अल्पकालिक लक्ष्य अंततः उनकी आने वाली पीढ़ियों को नष्ट कर देगा। इस तरह की सोच और दुश्मनी के कारण हमारे पूर्वजों ने संस्कृति, संपत्ति और संसाधनों के साथ-साथ गुलाम मानसिकता विकसित करने के मामले में पहले ही बड़ी कीमत चुकाई है।

जिम्मेदार नागरिकों के रूप में, हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए, उनका पालन करना चाहिए और उन्हें लागू करना चाहिए-

1. युवाओं को सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को सिखाएं और उनका अभ्यास करें, और उन्हें वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और वैश्विक अच्छे दृष्टिकोण को समझने में मदद करें जो इन गतिविधियों और पूजापद्धति को रेखांकित करता है।

2. रामायण, महाभारत और भगवद गीता को जल्द से जल्द स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए सरकारों पर दबाव डालें।

3. महान भारत की अवधारणा का विरोध करने वाले किसी भी राजनीतिक दल, गैर सरकारी संगठन या अन्य सामाजिक संगठन का समर्थन न करें।

4. अपने बच्चों में 'महान संस्कृति का पालन करने वाला राष्ट्र पहले, और अंत में स्वयं' का मूल्य सिखाएं।

धर्म के अनुसार मानव जाति की विजय हो और धार्मिक कट्टरता खत्म हो।

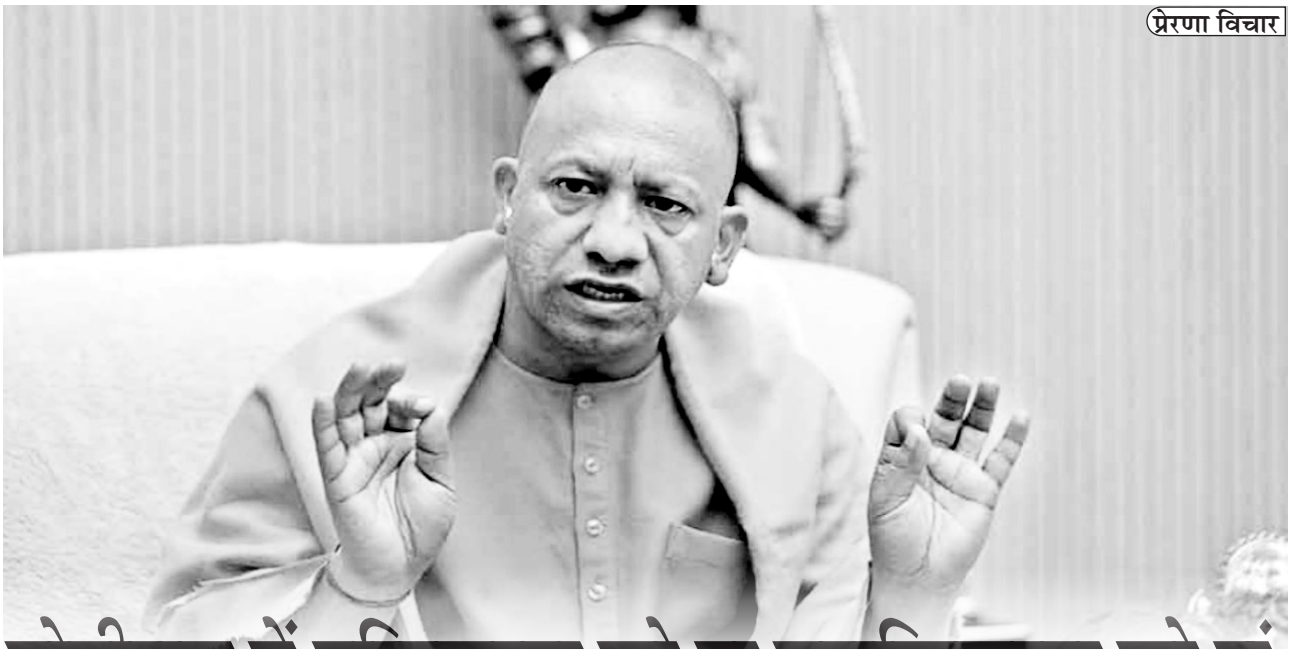

योगीराज में तुष्टिकरण को ना सशक्तिकरण को हां

मृत्युंजय दीक्षित
लेखक एवं स्तम्भकार

योगी आदित्यनाथ की सरकार ने आरम्भ से ही माफियाओं व अपराधियों के खिलाफ जीरो टालरेंस की रणनीति पर काम किया है। प्रदेश में संगठित अपराध को समाप्त करने के लिए जो अभियान चलाया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश में नगर निकाय चुनाव हेतु मतदान दो चरणों में शांतिपूर्वक संपन्न हो गया। इन चुनावों में प्रचार करते हुए अपनी जनसभाओं में प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हमारी सरकार में अब किसी का तुष्टिकरण नहीं हो रहा अपितु सभी के सशक्तिकरण पर ध्यान दिया जा रहा है और जिसका प्रभाव आम जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई पड़ रहा है। मुख्यमंत्री ने उदहारण देते हुए कहा कि पहले बिजली कुछ जिलों में ही आती थी लेकिन अब सभी जिलों को पर्याप्त बिजली मिल रही है। प्रदेश में अब तक 45 लाख से अधिक आवास बिना किसी भेदभाव के मिल चुके हैं। किसी भी योजना में कोई भेदभाव नहीं किया जा रहा है। हर घर नल योजना का लाभ हर किसी को मिल रहा है। सिंचाई की सुविधा हर किसान को मिल रही है। पहले की सरकार केवल तुष्टिकरण और घोटाले ही करती थी जबकि अब सभी योजनाएं बिना किसी भेदभाव के लागू की जा रही हैं। मुख्यमंत्री जनसभाओं में हाथ उठाकर पूछते थे कि क्या आप सभी को फ्री राशन मिल रहा है, बिजली मिल रही है, क्या उज्ज्वला योजना का लाभ सभी को मिल रहा है, उसमें किसी प्रकार का भेदभाव तो नहीं हो रहा है, क्या आप सभी से कोई जाति या धर्म पूछता है, तो जनता भी उसी अंदाज में अपना हाथ उठाकर योगी- योगी के नारे लगाकर अभिनंदन करती थी ।

प्रदेश में सपा, बसपा कांग्रेस सहित सभी विरोधी यह आरोप लगाते हैं कि जब से प्रदेश में योगी सरकार आयी है तब से मुस्लिमों पर अत्याचार बढ़ गए हैं और उनका फर्जी एनकाउंटर किया जा रहा है। प्रदेश में विपक्ष सरकार पर धार्मिक व जातिगत आधार पर भेदभाव का आरोप लगा रहा है जिसे योगी जी व प्रदेश सरकार के मंत्री सिरे से खारिज करते हैं। जब से खतरनाक माफिया अतीक व उसके भाई अशरफ की हत्या हुई है तब से यह आरोप और तीखे हो गये हैं।

प्रदेश में अपराधी को केवल अपराधी की दृष्टि से देखा जाता है न कि उसके मजहब या जाति के आधार पर। अपराधियों व माफियाओं पर हो रही कार्यवाही को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हो रहा है।

योगी आदित्यनाथ की सरकार ने आरम्भ से ही माफियाओं व अपराधियों के खिलाफ जीरो टालरेंस की रणनीति पर काम किया है। प्रदेश में संगठित अपराध को समाप्त करने के लिए जो अभियान चलाया जा रहा है, उसमें सभी जाति, वर्ग व धर्म के अपराधी व माफिया शामिल हैं। समाजवादी सरकार जिन आतंकवादियों की रिहाई करवाने का प्रयास कर रही थी, आज उन सभी को सजा मिल रही है। प्रदेश में कानून का राज कायम करने के लिए योगी सरकार ने 63 हजार से अधिक अपराधियों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट और 800 से अधिक अपराधियों के विरुद्ध रासुका के तहत कार्रवाई की है। इन अपराधियों की 90 अरब रुपये से अधिक की चल अचल संपत्तियों को भी जब्त किया गया है। प्रदेश में बुलडोजर का खौफ ऐसा छा गया है कि क्या मीडिया क्या छुटभैये बदमाश सभी अतिक्रमण

करना या जमीन पर कब्जा करना भूल गये हैं। अपराधियों पर कार्यवाही के कारण आज बहुत से अपराधी खुद ब खुद गले में तख्ती टांग कर थाने में आत्मसमर्पण करने पहुंच रहे हैं।

अब प्रदेश में अपराधी को केवल अपराधी की दृष्टि से देखा जाता है न कि उसके मजहब या जाति के आधार पर। अपराधियों व माफियाओं पर हो रही कार्यवाही को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हो रहा है। जो बेटियां सुरक्षित स्कूल कालेज नहीं जा पाती थीं, आज वे देर रात तक अपनी स्कूटी पर अकेले घूमने पर भी सुरक्षित अनुभव कर रही हैं।

अब प्रदेश सरकार जो भी योजना लाती है, वह सभी 75 जिलों के लिए होती है। चाहे वह एक जिला एक उत्पाद योजना हो या फिर एक जिला एक पर्यटन केंद्र योजना। फरवरी माह में आयोजित किये गए ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में भी प्रदेश के सभी जिलों को सहभागी बनाया गया था। परिवहन सेवा के अंतर्गत भी प्रदेश के सभी जिलों को राजधानी लखनऊ से जोड़ा जा रहा है। प्रदेश के हर मंडल के हर जनपद को सशक्त बनाने के लिए व्यापक कार्ययोजना बनायी जा रही है। प्रदेश की योजना में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं हो रहा है। सभी पात्र अभ्यर्थियों को प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत आवास मिल रहे हैं।

प्रदेश में महिलाओं, युवाओं, दिव्यांगों को सशक्त बनाने के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। नवरात्रि के पावन अवसर पर बेटियों को सशक्त बनाने के लिए कई अभियान चलाये जाते रहे हैं। महिलाओं के लिए मुख्यमंत्री महिला सामर्थ्य योजना का संचालन भी हो रहा है। प्रदेश सरकार गरीब बेटियों के विवाह के लिए मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना चला रही है जिसका लाभ भी बिना भेदभाव के दिया जा रहा है।

मेधावी छात्र-छात्राओं को बिना किसी भेदभाव के लैपटॉप, टैबलेट व छात्रवृत्ति का वितरण किया जा रहा है। समाज के कमजोर वर्ग के छात्रों के सशक्तिकरण के लिए निःशुल्क अभ्युदय कोचिंग चलायी जा रही है जिसके माध्यम से छात्र अध्ययन कर सरकारी नौकरियों के लिए परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं।

सुरक्षा का वातावरण होने के कारण निवेशक भारी संख्या में प्रदेश में निवेश के लिए आकर्षित हो रहे हैं। जब समस्त निवेश धरातल पर उतर आयेगा तब प्रदेश का विकास की एक नयी गाथा लिखेगा। यही कारण है कि जब प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कहते हैं कि ''यूपी में नो दंगा, नो कर्फ्यू'' केवल विकास और सशक्तीकरण तो जनता खुशी से झूमकर उनका अभिनंदन करती है।

कथन

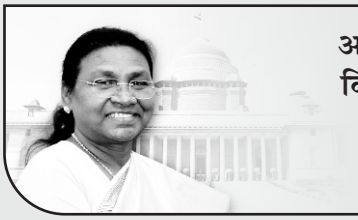

आज समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। मेरा मानना है कि महिलाओं के विकास में ही देश का विकास है और देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में महिलाओं का योगदान एक अहम भूमिका निभाएगा।

- द्रोपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

भारत के तेज विकास के लिए भारत के राज्यों का संतुलित विकास भी उतना ही आवश्यक है। आज देश का प्रयास है कि कोई भी राज्य संसाधनों के अभाव के कारण विकास की दौड़ में पिछड़ना नहीं चाहिए।

-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमन्त्री

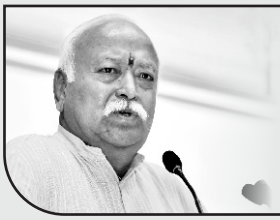

समाज को ज्ञान रहे तो वह छल कपट को पहचान सकेगा। उसमें आस्था पक्की करनी चाहिए। हमारे व्यक्ति को रामायण तो पता है, लेकिन उसका भाव नहीं पता। उसे तैयार करना पड़ेगा ताकि सवाल पूछने वाले को सही जवाब दे सकें।

- डॉ. मोहन भागवत (सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

उभरती भारत की शक्ति किसी को डराने या धमकाने के लिए नहीं, बल्कि वसुधैव कुटुंबकम के आधार पर सबका कल्याण सोचने वाली है।

- दत्तात्रेय होसबाले (सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

शरीर, मन और आत्मा को जोड़ता है योग का धागा

सोनम लववंशी
स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी

योग प्राचीन भारतीय परम्परा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योग अभ्यास शरीर एवं मन, विचार एवं कर्म, आत्मसंयम एवं पूर्णता की एकात्मकता तथा मानव एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह स्वास्थ्य एवं कल्याण का पूर्णतावादी दृष्टिकोण है।

समस्त सृष्टि और संस्कार में योग समाहित है। योग विकारों से मुक्ति का मार्ग है। योग हमारे आध्यात्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान का परिचायक है। योग की सार्थकता को दुनिया के लगभग सभी धर्मों ने स्वीकृति प्रदान की है। आत्मा और परमात्मा को जोड़ने का एक महत्वपूर्ण साधन योग ही है। इसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का गुण होता है। सनातन परम्परा में योग को काफी महत्व दिया गया है। तभी तो श्रीमद्भगवद् गीता में 'योग' शब्द का कई बार उपयोग किया गया है, जैसे बुद्धि योग, सन्यास योग, कर्मयोग इत्यादि। श्रीमद्भगवद् गीता में श्रीकृष्ण जी ने कहा है कि 'योगः कर्मसु कौशलम।' अर्थात् कर्म में कुशलता ही योग है। इतना ही नहीं महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में कहा है, 'योगश्चितवृतिनिरोधः' जिसका अर्थ हुआ चित की वृतियों के निरोध का नाम योग है। वहीं विष्णु पुराण के अनुसार 'योगः संयोग इत्युक्त जीवात्म परमात्मने' अर्थात् जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही योग है।

इस बार हम सभी 21 जून को 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मना रहे हैं। जिसकी थीम 'वन वर्ल्ड, वन हेल्थ' रखी गई है। ये थीम कहीं न कहीं भारतीयता और भारत के प्राचीनतम विचार "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सिद्धांत से प्रेरित है।

योग एक प्राचीन परंपरा है जो लगभग 5 हजार वर्षों से अनवरत चली आ रही है। इस योग परंपरा को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार में काफी बढ़ावा मिला है। आज विश्व के 200 से अधिक देश भारत की इस गौरवशाली वैदिक परंपरा का अनुसरण कर रहे हैं और जीवन को बेहतर बनाने का जरिया योग को बना रहे हैं। प्रधानमंत्री ने योग को वैश्विक पटल पर स्थापित करने का कार्य किया है। योग को अब वैश्विक मान्यता मिल चुकी है। अब योग जीवात्मा और परमेश्वर के मिलन का साधन मात्र ही नहीं बल्कि ईश साधना का भी साध्य बन चुका है। गीता का छठवां अध्याय योग को समर्पित है। योग की ताकत कोरोना काल में दुनिया ने देखी है।

प्राणायाम ने जहां कोरोना काल में फेफड़ों को मजबूती प्रदान की, वहीं ऑक्सीजन का स्तर भी बढ़ाने में मदद की। प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति

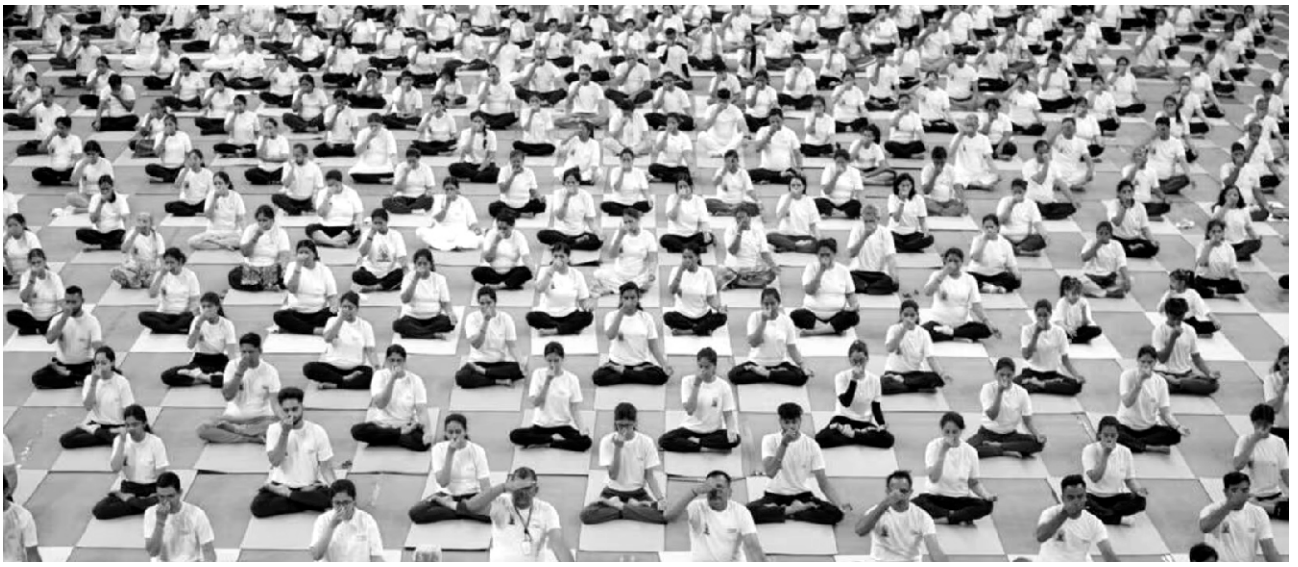

सत्व प्रधान रही है और योग जीवनशैली का महत्वपूर्ण अंग हुआ करता था जिसे कोरोना काल में पुनः एक बार मजबूती मिली। कोरोना काल के बाद से लोग योगिक जीवनशैली के प्रति सचेत हुए हैं। यह एक सुखद संदेश है। योग स्वयं को स्वस्थ रखने और इम्यून शक्ति बढ़ाने का सबसे उपयोगी साधन है और यही वजह है कि इसको वैश्विक स्तर पर प्रचारित-प्रसारित करने का काम केंद्र की सरकार कर रही है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को ही मनाए जाने के पीछे भी अपना वैज्ञानिक तर्क है। 21 जून को उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे लंबा दिन होता है और इसे ग्रीष्म संक्रांति के नाम से जाना जाता है। भारतीय परंपरा की मानें, तो ग्रीष्म संक्रांति के बाद सूर्य दक्षिणायन होता है और कहते हैं कि सूर्य जब दक्षिणायन में जा रहा होता है। उस समय आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने का समय होता है। यही वजह है कि इस दिन को योग दिवस के रुप में पहचान दी गई।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार भी योग, मन और शरीर पर कार्य करने के अलावा मानवीय संबंधों को संतुलित और मजबूत बनाता है। 27 सितंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि ''योग प्राचीन भारतीय परम्परा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योग अभ्यास शरीर एवं मन, विचार एवं कर्म, आत्मसंयम एवं पूर्णता की एकात्मकता तथा मानव एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह स्वास्थ्य एवं कल्याण का पूर्णतावादी दृष्टिकोण है। योग केवल व्यायाम नहीं है, बल्कि स्वयं के साथ, विश्व और प्रकृति के साथ एकत्व खोजने का भाव है। योग हमारी जीवन शैली में परिवर्तन लाकर हमारे अन्दर जागरूकता उत्पन्न करता है तथा प्राकृतिक परिवर्तनों से शरीर में होने वाले बदलावों को सहन करने में भी सहायक हो सकता है।'' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का यह उद्बोधन अपने-आप में योग का सविस्तार वर्णन है। योग को शब्दों में समेट पाना असंभव है। योग एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवन में बदलाव लाने का साधन है।

इस बार हम सभी 21 जून को 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मना रहे हैं। जिसकी थीम 'वन वर्ल्ड, वन हेल्थ' रखी गई है। ये थीम कहीं न कहीं भारतीयता और भारत के प्राचीनतम विचार "वसुधैव कुटुम्बकम" के सिद्धांत से प्रेरित है। इस बार का एक सुखद पहलू यह भी है कि इसी बीच हमारा देश जी-20 की अध्यक्षता भी कर रहा है। आजादी का अमृतकाल मना रहा है। आजादी के अमृतकाल में योग के माध्यम से हम 'वसुधैव कुटुकम्बकम' की भावना को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। इसके माध्यम से हम न सिर्फ अपनी परंपरा और संस्कृति का प्रसार दुनिया में करने में सफल होंगे, अपितु ज्ञान परंपरा और ऋषि-मुनियों के मूल्यों को जीवित रख पाएंगे। योग शरीर और मन को शांत रखने का एक बेहतरीन तरीका है। यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का संतुलन बनाता है। इसके अलावा यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी मदद करता है। योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास को विकसित करने वाला कारक है। योग के माध्यम से हम अपने शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित कर सकते हैं। ऐसे में योग के महत्व को दुनिया को अंगीकार करने की आवश्यकता है और इस दिशा में दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है।

होलोग्राम : भारतीय टेलीविजन का भविष्य

अनुराग सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, आईएमएस, गाजियाबाद

भारत में टेलीविजन का प्रारंभ एक प्रयोग के तौर पर किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा का प्रसार था जो समय के साथ परिवर्तित हुआ और मनोरंजन और सूचना के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम बना जिसके साथ शुरू हुई भारत में टेलीविजन की विकास यात्रा। इसने प्रसारण, कार्यक्रम निर्माण में एक नई उंचाई प्रदान की। भारतीय टेलीविजन पिछले चार दशकों से संचार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही अपनी प्रसारण तकीनीकी को विकसित करते हुए सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट (SITE) लॉन्च किया। उपग्रहों, अर्थ स्टेशनों, अपलिंक्स और डाउनलिंक्स के हार्डवेयर के क्षेत्र में अद्भुत काम किया।

भारत सरकार द्वारा वर्ष 1991 में आर्थिक और सामाजिक सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की गयी जिसके तहत सरकार ने निजी और विदेशी प्रसारकों को अनुमति दी। सीएनएन, स्टार टीवी जैसे विदेशी चैनल और जी टीवी, सन टीवी जैसे घरेलू चैनल ने उपग्रह प्रसारण शुरू किया। वर्तमान में 1000 से ज्यादा निजी चैनल अपने कार्यकम प्रसारित कर रहे हैं। भारत में निजी टेलीविजन नेटवर्क विज्ञापनों के माध्यम से व्यावसायीकरण और उपभोक्तावाद को प्रोत्साहित करते हैं जिसके कारण भारतीय टेलेविजन उद्योग और टेलीविजन विज्ञापन अगले पांच वर्षों में तेजी से बढ़ने के लिए तैयार है। अनुमान है कि भारत विश्व में टेलीविजन विज्ञापन में तीसरा सबसे बड़ा बाजार बन जायेगा। आज टेलीविजन अपनी विकास यात्रा में काफी आगे बढ़ चुका है और इसमें कई नए आयाम जुड़ चुके हैं जो किसी को भी रोमांचित कर सकते हैं। आधुनिक तकनीकी और प्रौद्योगिकी के दौर में जहां प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है और एक होड़ सी लगी है कि प्रसारण में नवीनता और आकर्षण हो, इसके लिए टेलीविजन चैनल नित नये प्रयोग कर रहे हैं।

प्रसारण में होलोग्राम तकनीक एक जादुई प्रभाव छोड़ता है। वास्तव में देखें तो होलोग्राम तकनीक टेलीपोर्टिंग का ही एक तरीका है परन्तु उससे थोड़ा भिन्न है। टेलीपोर्टेशन और थ्रीडी होलोग्राम में जो अन्तर है, वह कुछ-कुछ कम्प्यूटर में इस्तेमाल होने वाले कट और कश्चपी जैसा ही है, जैसे कट करने पर टेक्स्ट अपने स्थान से हट जाता है और दूसरे स्थान जहां भी हम उसे पेस्ट करें, वहां चला जाता है।

हमसे दूर दराज में घटी किसी घटना को अपने ड्राइंग रूम में बैठकर टेलीविजन के माध्यम से लाइव देखा है पर अब यह नई बात नहीं रही। सोचिये, अगर दूर-दराज में रहने वाला व्यक्ति सशरीर स्टूडियो में अवतरित हो जाए तो आप कहेंगे, यह संभव

नहीं है परन्तु आज प्रतिस्पर्धा और प्रौद्योगिकी की वजह से यह संभव है कि मुंबई में बैठे किसी व्यक्ति को दिल्ली के स्टूडियो में लांच किया जाये या किसी मृत कलाकार को स्टूडियो में बैठा कर प्रसारण किया जाए। यह है रोमांच करने वाला प्रकरण, जिसने टेलीविजन प्रसारण में एक अलग रोमांच पैदा किया है। इसकी शुरुआत 11अप्रैल 2014 में देश के लोकप्रिय चैनल आज तक के एक खास प्रसारण से हुई। यह ऐसा था जो पहले कभी नहीं देखा गया था जिसमे नोएडा स्टूडियो में मौजूद जाने माने एंकर पुण्य प्रसून बाजपेयी को मुंबई स्टूडियो में मौजूद सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के साथ सीधे बातचीत करते हुए देखा गया। दर्शकों को आभास हुआ कि अमिताभ जी नोएडा स्टूडियो मे है जबकि वह उस समय मुंबई में मौजूद थे। यही है मायाजाल टेलीविजन का। देश ने टेलीविजन प्रसारण में एक नई तकनीक को देखा, जिसका नाम है होलोग्राम। इसी साल होलोग्राम तकनीक का प्रयोग एक और चैनल जी न्यूज ने किया जिसमें देश के जाने-माने फुटबॉलर भूटिया को स्टूडियो में अवतरित किया। इस प्रसारण को देख दर्शकों के मन में उत्सुकता हुई कि यह कैसे संभव हुआ जिसका जवाब है होलोग्राम।

प्रसारण में होलोग्राम तकनीक एक जादुई प्रभाव छोड़ता है। वास्तव में देखें तो होलोग्राम तकनीक टेलीपोर्टिंग का ही एक तरीका है परन्तु उससे थोड़ा भिन्न है। टेलीपोर्टेशन और थ्रीडी होलोग्राम में जो अन्तर है, वह कुछ-कुछ कम्प्यूटर में इस्तेमाल होने वाले कट और कॉपी जैसा ही है, जैसे कट करने पर टेक्स्ट अपने स्थान से हट जाता है और दूसरे स्थान जहां भी हम उसे पेस्ट करें, वहां चला जाता है। उसी प्रकार टेलीपोर्टेशन में किसी भौतिक वस्तु या इंसानी शरीर को एक स्थान से पूरी तरह हटाकर दूसरे स्थान पर भेज दिया जाता है, और थ्रीडी होलोग्राम तकनीक कम्प्यूटर के कॉपी फंग्शन की तरह काम करती है। यहां किसी भी वस्तु या इंसानी शरीर का आभासी थ्रीडी प्रतिबिंब तैयार किया जाता है और एक साथ कई स्थानों पर उसे दिखाया जा सकता है। इसका प्रयोग भारतीय टेलीविजन उद्योग इंटरव्यू न्यूज कवरेज, डिबेट और चुनावी कवरेज प्रसारण सेट में कर रहा है।

यह तकनीक भारतीय मीडिया को एक नई ऊंचाई प्रदान कर रहा है। देश में वर्ष 2014 के आम चुनाव में आम भारतीय चुनावों में तत्कालीन भाजपा उम्मीदवार नरेंद्र मोदी जो बाद में देश के प्रधानमंत्री बने उनके भाषणों को एक साथ ढेर सारी जगहों के प्रसारण के लिए भी भारतीय मीडिया ने होलोग्राम तकनीक का प्रयोग किया था, और स्वयं प्रधानमंत्री इस तकनीक से इतने प्रभावित हैं कि इस तकनीक को देश के विकास से जोड़ने के लिए संकल्पित दिखते हैं। होलोग्राम तकनीक की कहानी अब और आगे बढ़ रही है। अभी हाल ही में माइक्रोसॉफ्ट ने होलोलेंस नाम की एक नई प्रौद्योगिकी विकसित की है जिसके माध्यम से दूर दराज में बैठे व्यक्ति के साथ मुखातिब हुआ जा सकता है जो टेलीविजन प्रसारण और कार्यक्रम निर्माण को अधिक जीवंत करेगा और टेलेविजन प्रसारण में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लायेगा।

क्या है होलोग्राम तकनीक?

असल में होलोग्राम 3 डी प्रसारण तकनीक है जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु को वास्तविकता के करीब महसूस किया जा सकता है। वास्तव में यह प्रकाश का जादू है जो 2 डी पिक्चर को 3 डी में परिवर्तित करता है। त्रिआयामी होलोग्राफी तकनीक में एक पारदर्शी रंगीन प्रकाश का प्रयोग किया जाता है, जिसे प्रोजेक्टर के माध्यम से बनाया जाता है। इस तकनीक में मनुष्य या किसी भी वस्तु से निकलने वाली रोशनी या प्रकाश को त्रिआयामी कैमरों द्वारा रिकॉर्ड कर लिया जाता है। रिकॉर्ड किये गये वीडियो, पिक्चर को थ्रीडी प्रोजेक्टर द्वारा जब प्ले किया जाता है, वह उसी प्रकार दिखाई देता है जैसा रिकॉर्डिंग के समय था। यह चित्र और वीडियो बिलकुल वैसे ही दिखाई देते हैं जैसे आप किसी वास्तविक वस्तु या मनुष्य को पास से देख रहे हों या वह आपके सामने हो। इस तकनीक का विकास ब्रिटिश-हंगेरीयन भौतिक विज्ञानी डैनिस गैबर ने किया था जिसके लिए उन्हें नोबल पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया।

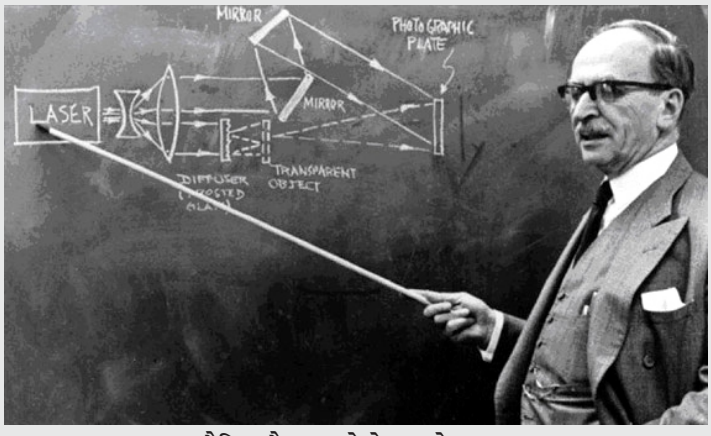

डैनिस गैबर : होलोग्राम के जनक

संघ शिक्षा वर्ग तृतीय वर्ष

रतन शारदा

हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय वर्ष शिक्षण का प्रारंभ नागपुर में हुआ। समाचार पत्रों में यह खबर बनी। संघ की प्रशिक्षण गतिविधियों के बारे में साधारणतः ऐसी चर्चा नहीं होती। क्योंकि संघ को केवल राजनीतिक और सांप्रदायिक दृष्टि से ही देखा जाता रहा है। लगता है, चश्मा थोड़ा बदला है। यह अच्छी बात है।

संघ के स्वयंसेवकों को नकारात्मक दृष्टिकोण से देखना और उनका व्यवहार सड़क छाप राजनीतिज्ञों, गुंडों और इस्लामी आतंकवादियों से करने का एक कारण यह भी है कि संघ के स्वयंसेवक को कार्यकर्त्ता बनाने का प्रयास बड़ा तपस्या पूर्ण होता है। तृतीय वर्ष में प्रवेश पाने के लिए तीन सीढ़ियाँ पार करनी होती हैं। और उन तीन सीढ़ियों तक पहुँचने के लिए भी कुछ जिम्मेदारियां सम्भालनी पड़ती हैं।

तृतीय वर्ष के पहले एक प्राथमिक वर्ग 7 दिन का। फिर प्रथम वर्ष 20 दिन का, उसके बाद 25 दिन का द्वितीय वर्ष वर्ग। इन सभी वर्गों में जाने के लिये दो-दो वर्षों का अंतर जिसमें स्वयंसेवक को दी गई जिम्मेदारियां सही तरह निभाई गई तभी प्रवेश मिलता है। तब जाकर तृतीय वर्ष में प्रवेश मिलता है। अर्थात् जिम्मेदारियों की अग्नि से तप कर एक स्वयंसेवक तृतीय वर्ष शिक्षित कार्यकर्त्ता बनता है। अचानक जोश आया, मोर्चे निकाले, एक-दो को पीट दिया, धौंस दे दी, पुलिस स्टेशन के चक्कर लगा लिए कार्यकर्त्ता बन गये, ऐसा नहीं है।

इतना ही नहीं, इससे पहले भी स्वयंसेवक को 8–10 साल की वय से ही सामाजिक व्यवहार और जिम्मेदारी का अभ्यास लगाने शाखा में ही प्रयोग शुरू हो जाते हैं। जैसे 9–10 साल की वय में गटनायक अर्थात् 8–10 समवयस्क साथियों की टोली का अगुआ, नेता। उनके घर जाना, उनके परिवार से मिलना, उसके अभ्यास के बारे में पूछना और कहीं समस्या हो तो अपने बड़ों को सूचित करके उसकी समस्या का समाधान करने का प्रयत्न करना। फिर उसे गण शिक्षक अर्थात् 2–3 गटों से मिलकर बने 20–21 स्वयंसेवकों का गण शिक्षक यानी उनके शारीरिक अभ्यास और खेल लेना। जैसे वह तरुण बनने की ओर अग्रसर होता है तो वह मुख्य शिक्षक, अर्थात् पूरी शाखा का शिक्षक बनता है, जो रोज के शाखा के एक घंटे की तैयारी, उसे लेने और शाखा व्यवस्थित चले इसकी चिंता करता है। यानी जब एक किशोर केवल मित्रों से मस्ती करने, घूमने फिरने इत्यादि कर रहा होता है, संघ का किशोर, परिवार, मित्रों से मिलने, उनकी समस्याओं का निवारण और उनके नेतृत्व करने के लिए तैयारी कर चुका होता है। इस प्रकार क्रमशः एक स्वयंसेवक एक जागृत नागरिक एवं कई परिवारों का मित्र बन चुका होता है।

इस विकास पथ पर सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ वह मुहल्ले से गाँव, कई गाँव या शहर के कार्यवाह के नाते समाज सेवा भी करता है, खुद का विकास भी। वह संघ उत्सव, समाज उत्सव, स्थानीय वर्गों और शिविरों में भी जाता है, वहाँ शिक्षक का काम करता है, प्रबंधक का काम करता है। यह सब करते हुए, उसे संघ की समझ हो, समाज और राष्ट्र के विषयों का ज्ञान हो और उत्तर ढूँढने के लिए बौद्धिक क्षमता निर्मित हो, इसलिए उसे संघ शिक्षा वर्गों की इस श्रेणी से होते हुए अपने आपको संवारना और योग्य बनाना होता है।

ऐसे व्यक्ति को आप कभी भी गैर जिम्मेदार, समाज विरोधी, उच्छृंखल कार्य करने में संलग्न कैसे पायेंगे, जिसने वर्षों से समाज और राष्ट्र की आराधना करते हुए अपने तरुण वय को समर्पित कर दिया?

इस शिक्षण व्यवस्था का पहला स्वरूप 1931 में सिंधी नामक विदर्भ के एक गाँव में निश्चित हुआ, और मामूली बदल करते हुए इस पद्धति से लाखों स्वयंसेवक तैयार हुए। संघ का पहला तृतीय वर्ष 1940 में संघ संस्थापक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार जी के समक्ष हुआ, जिस समय वे अपनी अंतिम साँसें गिन रहे थे। संघ स्थापना से 15 वर्ष के अथक परिश्रम से आहूत हुआ शरीर साथ छोड रहा था, तब उन्हें संपूर्ण अखंड भारत के दर्शन वहाँ आये परीक्षार्थियो में हुए जिसे उन्होंने हार्दिक भावना पूर्ण भाव से अंतिम बार संबोधित किया।

अगली बार जब कोई संघ के कार्यकर्ता पर किसी भी प्रकार के बेबुनियाद आरोप लगाये तब आपको अनुभव होगा कि संघ द्वेष से पीड़ित उस व्यक्ति ने कभी संघ और समाज को समझा ही नहीं, ना ही समझने की कोशिश की। ऐसे उत्तर प्रशिक्षित कार्यकर्ता ही इस राष्ट्र के और संघ के आधार हैं जो हर संकट में समाज के साथ खड़े पाये जाते हैं।

भारत के बुनियादी ढांचे पर साइबर हमले का खतरा!

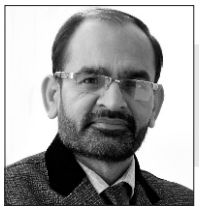

डॉ. अनिल कुमार निगम
स्वतंत्र टिप्पणीकार

साइबर सुरक्षा आज वैश्विक मुद्दा है। जितनी तीव्र गति से भारत समेत विश्व के विभिन्न देशों में डिजीटलाइजेशन बढ रहा है, उतनी ही तेज गति से साइबर हमलों का खतरा मंडरा रहा है। भारत के बुनियादी ढांचे पर साइबर हमले का खतरा बना हुआ है। आज अमेरिका, भारत और ब्राजील साइबर हमलावरों के सीधे निशाने पर हैं। स्वास्थ्य और वित्त क्षेत्र के साथ-साथ विमानन उद्योग, तेल, गैस और ऊर्जा सेक्टर और तकनीकी कंपनियों जैसे मूलभूत ढांचे के महत्वपूर्ण अंगों को साइबर हमलों का निशाना बनाया जा रहा है। हालांकि भारत अपनी साइबर सुरक्षा पर काफी ध्यान दे रहा है, परंतु नवंबर 2022 में जिस तरीके से भारत के सबसे शीर्ष मेडिकल संस्थान-अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) दिल्ली को निशाना बनाया गया, वह अत्यंत चिंताजनक है। सवाल यह है कि अगर साइबर हमलावर भारत के मूलभूत ढांचे मसलन ऊर्जा आपूर्ति, रेलवे सिगनलिंग, पीएनजी गैस आपूर्ति, बैंकिंग सिस्टम को हैक कर लेते हैं तो क्या भारत इससे निपटने में सक्षम है? क्या भारत में सूचना तंत्र की सुरक्षा के उपाय अभी भी अपर्याप्त हैं? आखिर सरकार को क्या उपाय करना चाहिए ताकि भारत साइबर हमलों का आसान टार्गेट न बने?

वर्ष 2022 में भारत के सरकारी संस्थानों पर 82 साइबर हमले हुए। यह आंकड़ा पिछले वर्ष 2021 की तुलना में आठ गुणा अधिक है। साइबर हमलों का अध्ययन करने वाली कंपनी क्लाउडसेक की रिपोर्ट के अनुसार भारत में सरकारी संस्थाओं को टार्गेट करने वाले साइबर हमलों में तीव्र वृद्धि हुई है। 2021 में देश के सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं में सिर्फ 11 हमले दर्ज किए गए थे। भारत की कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम (CERT-IN) ने 2022 की अपनी इंडिया रैंसमवेयर रिपोर्ट में कहा था कि भारत में महत्वपूर्ण मूलभूत ढांचे समेत तमाम क्षेत्रों पर रैनसमवेयर के हमलों की संख्या में 51 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है।

यह विदित है कि एम्स पर जो साइबर हमला हुआ था, उसके चलते एम्स की गतिविधियों पर अत्यंत प्रतिकूल असर पड़ा था। अस्पताल के मुख्य और बैकअप सर्वर में सभी फाइलें करप्ट हो गई थीं। साइबर हमलावर लगभग 4 करोड़ मरीजों के आंकड़े चुराने में सफल रहे। इसमें बेहद संवेदनशील आंकड़े और मरीजों के मेडिकल रिकॉर्ड भी शामिल हैं। यह भी ज्ञात है कि वर्ष 2021 में अमेरिका की औपनिवेशिक पाइप लाइन में रूसी हमलावरों ने रैंसमवेयर से हमला कर दिया था, उसके बाद वहां अफरा-तफरी मच गई। यह पाइप लाइन छह दिनों के लिए ठप हो गई थी। अमेरिका के 17 राज्यों में गैस की जबर्दस्त किल्लत हो गई। वास्तव में **रैंसमवेयर एक तरह का मालवेयर है जो कंप्यूटर फाइलों, सिस्टम अथवा नेटवर्क को ऐक्सेस करने से रोकता है। हमलावर इसके माध्यम से पीड़ित पक्ष से अपनी मांगें पूरी करवाता है।**

वास्तविकता तो यह है कि विगत कुछ वर्षों में स्वास्थ्य क्षेत्र के मूलभूत ढांचे पर साइबर हमल बढ़े हैं। साइबर हमलों की निगरानी करने वाली आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़ी कंपनी, क्लाउडसेक का मानना है कि विश्व भर में स्वास्थ्य क्षेत्र पर जो साइबर हमले हो रहे हैं, उनमें भारत का स्थान दूसरा है। वर्ष 2021 में दुनिया में स्वास्थ्य क्षेत्र पर जो साइबर हमले हुए, उनमें से 7.7 प्रतिशत भारत पर हुए थे। हालांकि साइबर हमलों के मामले में सबसे ज्यादा निशाने पर अमेरिका ही है।

2021 में पूरी दुनिया में स्वास्थ्य क्षेत्र पर हुए साइबर हमलों में से अकेले अमेरिका पर 28 प्रतिशत हमले किए गए। ये दुनिया के तेजी से बढ़ते डिजिटलीकरण का नतीजा है, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के कारण ऐसा हो रहा है। एक अन्य सॉफ्टवेयर सुरक्षा कंपनी इंडसफेस ने कहा कि उसके ग्राहकों पर दस लाख से ज्यादा साइबर हमले हुए, इनमें से 2,78,000 हमले भारत में हुए। वर्ष 2021 में पूरी दुनिया में स्वास्थ्य क्षेत्र पर हुए साइबर हमलों में से अकेले अमेरिका पर 28 प्रतिशत आक्रमण किए गए। ये दुनिया के तेजी से बढ़ते डिजिटलीकरण का नतीजा है, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के कारण ऐसा हो रहा है।

जी-20 देशों का मानना है कि आगामी समय में विभिन्न देशों में जीवन के अनेक पहलुओं की कंप्यूटर, स्मार्ट फोन और इंटरनेट पर निर्भरता बढ़ेगी। इससे देशों को लाभ भी होगा लेकिन इससे साइबर हमलों का खतरा भी बढ़ेगा। देशों के पास स्थायी विकास के लक्ष्य हासिल करने के लिए अब दस साल से भी कम समय बचा है, लेकिन साइबर हमलों से दुनिया को होने वाला नुकसान वर्ष 2025 तक 10 खरब डॉलर तक पहुंचने की आशंका है। भारत के अनेक प्रयासों के बावजूद साइबर हैकर्स भारत के साइबर सुरक्षा तंत्र को भेदने में कई बार कामयाब रहे हैं। हालांकि भारत के गृहमंत्री अमित शाह ने साइबर सुरक्षा को पुख्ता करने के लिए सभी राज्यों को विशेष तैयारी करने एवं कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण देने के निर्देश दिए हैं। लेकिन हैकर्स साइबर हमलों की तकनीक और प्रक्रिया बहुत तेजी से बदल रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारत को अपने बुनियादी ढांचे को साइबर हमलों से सुरक्षित रखने के लिए न केवल हमलावरों की रणनीतियों, तकनीक और प्रक्रियाओं का गंभीर अध्ययन करना होगा बल्कि बुनियादी ढांचे की सुरक्षा लिए ऐसे चक्रव्यूह की रचना करनी होगी ताकि साइबर हमलावर उस पर आसानी से सेंध न लगा सके।

जनसंख्या विस्फोट
आपदा या अवसर

मोनिका चौहान
शिक्षिका

भारत पूरी दुनिया में जनसंख्या के मामले में सबसे बड़ा देश बन गया है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) ने पुष्टि की है कि भारत की जनसंख्या अब 142 करोड़ 86 लाख हो गई है। वहीं दूसरे स्थान पर चीन की जनसंख्या 142 करोड़ 57 लाख है। 1950 से चीन ही दुनिया का अब तक का सबसे अधिक आबादी वाला देश रहा है। छह दशकों में पहली बार भारत की आबादी चीन से 29 लाख ज्यादा हो गई है। रिपोर्ट बताती है कि पिछले साल चीन की जनसंख्या सबसे ज्यादा थी जिसमें 8.5 लाख की गिरावट आई जबकि भारत में पिछले साल 1.56 प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि हुई। चीन और भारत की आबादी लगभग बराबर है लेकिन चीन का क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल से लगभग 3 गुना से भी ज्यादा है। भारत में दुनिया की जमीन का 2 प्रतिशत हिस्सा है और दुनिया के 18 प्रतिशत लोग भारत में रहते हैं। भारत में जनसंख्या विस्फोट का शोर ना तो सरकार को सुनाई दिया और न ही नीति-नियंताओं ने इस पर ध्यान दिया। वर्ष 1941 में जब भारत अविभाजित था भारत की कुल जनसंख्या 39 करोड़ थी जिसमें पाकिस्तान व बांग्लादेश की आबादी भी शामिल है। विभाजन के बाद वर्ष 1951 में जब जनगणना कराई गई उस समय भारत की कुल आबादी 36 करोड़ थी। उतनी जितनी वर्तमान समय में अमेरिका की कुल आबादी है। पिछले 72 वर्षों में यह आबादी 36 करोड़ से बढ़कर 142 करोड़ तक पहुंच गई। जनसंख्या का गणित ये कहता है कि 72 वर्षों के दौरान भारत की आबादी में हर दिन औसतन 40 हजार की वृद्धि हुई और आज हम 142.86 करोड़ वाली जनसंख्या वाला देश बन गए।

वर्ष 1950 में चीन की कुल आबादी 55 करोड़ थी तब चीन हमसे बहुत आगे था लेकिन आज चीन आबादी के मामले में हम से पीछे हैं। अनुमान है कि स्थिति भविष्य में और गंभीर होगी। अमेरिका के एक विचारक समूह जिसका नाम है प्यू रिसर्च सेंटर उसका अनुमान है कि वर्ष 2100 अर्थात् 77 वर्ष बाद चीन की आबादी घटकर 76 करोड़ रह जाएगी यानी चीन की आबादी नाइजीरिया जैसे देश की आबादी से भी कम होगी। जबकि भारत उस समय भी दुनिया का सबसे घनी आबादी वाला देश होगा। दुनिया की कुल आबादी में भारत की हिस्सेदारी और चीन की हिस्सेदारी क्रमशः 17.77 प्रतिशत और 17.88 प्रतिशत है। वर्ष 2100 में दुनिया की आबादी में भारत की हिस्सेदारी 14.78 प्रतिशत होगी जबकि चीन की हिस्सेदारी घटकर 7.41 प्रतिशत रह जाएगी। इसके अलावा अनुमान है कि वर्ष 2040 तक भारत में 18 साल से कम उम्र के लगभग 43.5 करोड़, 19 से 40 वर्ष के लगभग 53 करोड़, 41 से 60 साल के लगभग 42 करोड़ और 60 साल से अधिक आयु के लगभग 25 करोड़ लोग भारत में होंगे।

आबादी बढ़ना सिर्फ जन्मदर बढ़ना नहीं होता है मृत्युदर घटना भी आबादी बढ़ने का एक कारण होता है। चीन को पीछे छोड़कर भारत ने सबसे ज्यादा आबादी वाला देश होकर जो अवांछित उपलब्धि हासिल की है उसका एक कारण यह भी है कि चीन के मुकाबले भारत

में मृत्यु दर कम हुई है। वर्ष 1950 में भारत में मृत्यु दर प्रति वर्ष 1000 लोगों पर 28 थी जो अब प्रतिवर्ष 1000 लोगों पर 7.4 रह गई है। चीन में वर्ष 1950 में 1000 लोगों पर मृत्यु दर 23 थी जो अब घटकर 7.37 रह गई है। भारत में वार्षिक दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा बच्चे जन्म लेते हैं अर्थात् भारत में जन्म दर भी ज्यादा है। वर्ष 1950 में भारत की प्रजनन दर 5.9 थी अर्थात् एक महिला अपने जीवन काल में औसतन 6 बच्चे पैदा करती थी अब भारत की प्रजनन दर 2.13 रह गयी है। वहीं चीन की बात करें तो वर्ष 1950 में प्रजनन दर 5.88 थी यानी भारत के लगभग बराबर लेकिन अब चीन की प्रजनन दर 1.7 रह गयी है। अर्थात् भारत में चीन से ज्यादा बच्चें पैदा होने से हम दुनिया के सबसे घनी आबादी वाला देश बन गये है। चीन ने बढ़ती आबादी को रोकने के लिए साल 1980 से 2015 तक चीन में वन चाइल्ड पॉलिसी (**One Child Policy**) लागू की थी और 2016 में चीन ने इस नीति को खत्म कर दिया और टू चाइल्ड पॉलिसी लागू किया। विशेषज्ञों के अनुसार चीन के करीब 40 करोड़ बच्चें इस नीति के कारण पैदा ही नहीं हो सके। नतीजतन आज चीन आबादी के मामले में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है और इस क्रम में भारत दुनिया की आबादी में प्रथम स्थान पर आ गया है।

बढ़ती जनसंख्या को अवसर की तरह देखे तो यह भारत के विश्व गुरु बनने के सपने को पूरा करते हुए दिखती है क्योंकि भारत में जनसंख्या का सबसे बड़ा हिस्सा युवाओं का है। युवाओं के आधार पर भारत चिकित्सा, रक्षा व तकनीकी के क्षेत्र में दुनिया की सबसे बड़ी ताकत बन सकता है। गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कंपनियों में भारत के युवाओं का होना इस बात का प्रमाण है कि भारत के युवाओं को अच्छी शिक्षा और बेहतर अवसर उपलब्ध कराए जाए तो पूरी दुनिया में भारत का परचम लहरा सकता है। सरकार ने युवाओं की आबादी को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास की पहल भी की है। कौशल विकास के कार्यक्रमों पर अधिक से अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे की आज का युवा अच्छे से प्रशिक्षण लेकर अपना स्टार्टअप भी शुरू कर सकें।

भारत दुनिया के लिए सबसे बड़ा बाजार होगा जहां हर बड़ी से बड़ी अंतर्राष्ट्रीय व बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना सामान व सेवाएं लोगों को बेचना चाहेंगी और इससे चीन का महत्व औद्योगिक क्षेत्र में कम होगा और भारत का महत्व बढ़ता जाएगा।

अगर देखा जाए तो भारत में जनसंख्या अधिक होने के कुछ फायदे भी होंगे। भारत दुनिया के लिए सबसे बड़ा बाजार होगा जहां हर बड़ी से बड़ी अंतर्राष्ट्रीय व बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना सामान व सेवाएं लोगों को बेचना चाहेंगी और इससे चीन का महत्व औद्योगिक क्षेत्र में कम होगा और भारत का महत्व बढ़ता जाएगा। वर्तमान समय में भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है और इस बाजार के हिसाब से हम अपनी शर्तों पर दूसरे देशों की कंपनियों को भारत में प्रवेश दे सकते हैं। ऐसा बाजार इन कंपनियों को और कहीं नहीं मिलेगा जहां लगभग 143 करोड़ की आबादी है। भारत का बाजार इतना बड़ा है कि अब एप्पल जैसी कंपनियां भी भारत में पैसा लगा रही हैं और अपने कारखाने व आउटलेट खोल रही हैं। सबको अपना सामान बेचना है सबको पैसा कमाना है उसके लिए विश्व में भारत का बाजार वर्तमान में निवेश के लिए सबसे ज्यादा फायदेमंद है।

स्तब्ध करती है द केरल स्टोरी

डॉ यशार्थ मंजुल
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं.

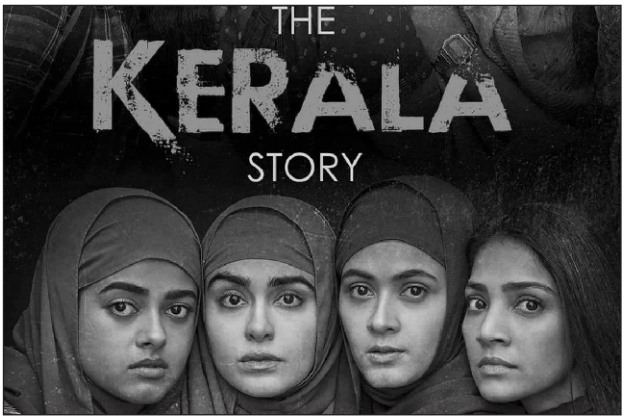

यह सर्वविदित तथ्य है कि केरल में धर्मांतरण उद्योग है और वहां के इस्लामवादियों ने इसे बढ़ावा दिया है। जबरन धर्मांतरण और इस्लामिक कट्टरता केरल के लिए कोई नई बात नहीं है। इस कट्टरवाद की अनदेखी का परिणाम विनाशकारी हो सकता है। अतीत से सीखने की जरूरत है अन्यथा वह स्वयं को दोहराता है। 102 वर्ष पूर्व केरल के ही मालाबार में जो वीभत्स घटना घटित हुई हमने उससे सीख नहीं ली। हाल ही में सुदीप्तो सेन की केरल स्टोरी ना सिर्फ हमें एजुकेट करती है बल्कि सोचने पर मजबूर भी करती है। कहानी की शुरुआत होती है, जांच अफसरों से घिरी फातिमा उर्फ शालिनी उन्नीकृष्णन (अदा शर्मा) से, जो अपने भयावह और दर्दनाक अतीत की दास्तां बयान करते हुए कहती है, मैंने आईएसआईएस कब ज्वाइन किया, ये जानने के लिए ये जानना जरूरी है कि कैसे और क्यों ज्वाइन किया। फिर शुरू होती है बैक स्टोरी जहां चार छात्राएं केरल के कासरगोड में एक नर्सिंग स्कूल में एडमिशन लेती हैं, जिसमें शालिनी अपनी रूममेट्स गीतांजलि (सिद्धि इदनानी), निमाह (योगिता बिहानी) और आसिफा (सोनिया बलानी) के साथ एक रूम शेयर करते हुए गहरी दोस्त बन जाती हैं। शालिनी, गीतांजलि और निमाह आसिफा के खौफनाक इरादों से पूरी तरह नावाकिफ है।

असल में आसिफा के पास अपने रूममेट्स को अपने परिवार और धर्म से दूर ले जाकर और इस्लाम में परिवर्तित करने का एक गुप्त एजेंडा है। इसके लिए वो अपने दो नकली भाइयों का सहारा लेती है और ऐसा जाल बिछाती है कि लड़कियों को कट्टरपंथी बनाया जाए। उनका ब्रेन वॉश करने के लिए उन्हें नशे की दवाईयां दी जाती हैं, परिवार के प्रति नफरत और धर्म को लेकर अविश्वास पैदा किया जाता है। इतना ही नहीं शालिनी को अपने प्यार के जाल में फंसाने वाला रमीज उसे गर्भवती कर देता है। समाज के डर से शालिनी इस्लाम कुबूल कर लेती है, किसी अनजान मर्द से निकाह कर भारत छोड़ कर पाकिस्तान और अफगानिस्तान के रास्ते सीरिया भाग निकलती है। आगे का सफर शालिनी के लिए और भी भयानक साबित होता है। यहां इंडिया में उसकी दोनों सहेलियों गीतांजलि और निमाह को भी नर्क से गुजरना पड़ता है। निर्देशक सुदीप्तो सेन सिनेमाइ भाषा के विभिन्न तत्वों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में कामयाब रहे हैं। काल्पनिक कहानियों में तो सिनेमेटिक लिबर्टी ली जा सकती है परंतु सत्य घटनाओं पर आधारित कथा फिल्मों में ये गुंजाइश बिल्कुल भी नहीं रहती। ऐसी फिल्मों में निर्देशक को वृत्तचित्रात्मक पहलुओं को उजागर करना आवश्यक हो जाता है। जाहिर सी बात है ऐसा करने के लिए उसे लिखित साहित्य के साथ फील्ड पर रह कर शोध करने की भी आवश्यकता होती है। सुदीप्तो सेन इसमें कामयाब होते हैं और एक डॉक्यु ड्रामा की जरूरत के हिसाब से सत्य को कथा में पिरोने के बीच की खाई को पाटने में भी कामयाबी हासिल करते है। फिल्म का संपादन सुगठित है और छायांकन यथार्थवादी शैली के अनुरूप है जो ऐसी फिल्म की दृश्यात्मक जरूरत को पूरा करता है।

सुदीप्तो सेन फिल्म के प्रथम दृश्य से ही इस बात को स्थापित करते हैं कि ये भले ही एक कथा फिल्म है परंतु ये कथानक गहरे अनुसंधान एवं शोध की ही उपज है।

द केरल स्टोरी का मजबूत कला पक्ष अपनी सुगठित सिनेमाइ भाषा के कारण ही है। इस फिल्म की यथार्थवादी शैली ही इसकी प्रभावक क्षमता को बढ़ाती है और यही दर्शकों में रस के संचार का कारक भी है। सुदीप्तो सेन फिल्म के प्रथम दृश्य से ही इस बात को स्थापित करते हैं कि ये भले ही एक कथा फिल्म है परंतु ये कथानक गहरे अनुसंधान एवं शोध की ही उपज है। डॉक्यु ड्रामा में सत्य और कल्पना के बीच की बारीक रेखा को पाटने में इस फिल्म के निर्माणकर्ता सफल रहे। समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, जनसंचार एवं कला के विद्यार्थियों को इस फिल्म को अनिवार्यतापूर्वक देखना चाहिए एवं भविष्य में ऐसी कृतियों का सृजन भारतीय समाज को एजुकेट करने के लिए होता रहे उसके लिए गहरे शोध से आधार सामग्री का भी संकलन इन विद्यार्थियों को करना चाहिए।

जगन्नाथ-पुरी रथ यात्रा एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

प्रोफेसर डॉ. हरेन्द्र सिंह
सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री' विभूषित ख्याति प्राप्त शिक्षाविद,
शैक्षिक प्रशासक, प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिन्तक

अमूर्त संस्कृति किसी समुदाय अथवा राष्ट्र की वह निधि होती है जो कि सदियों से उस समुदाय या राष्ट्र के अवचेतन को अभिभूत करते हुए निरंतर समृद्ध होती रहती है। यह किसी समाज की मानसिक चेतना का प्रतिबिंब होती है, जो कला, क्रिया या किसी अन्य रूप में अभिव्यक्त होती है। अमूर्त संस्कृति, अमूर्त सांस्कृतिक समय के साथ अपनी समकालीन पीढ़ियों की विशेषताओं को अपने में आत्मसात करते हुए मौजूदा पीढ़ी के लिये विरासत के रूप में उपलब्ध होती है।

हमारा देश भारत मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों का विश्व में सबसे बड़ा संग्रह वाला देश है। भारत में अनोखी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परंपराओं का भंडार है, जिनमें भारतीय संस्कृति की बहुलता और अनेकता सम्पूर्ण विश्व के निवासियों के लिए कौतुहल का विषय भी रहती है। ऐसी ही अनोखी एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत है भगवान जगन्नाथ को समर्पित जगन्नाथ-पुरी रथ यात्रा जो कि प्रतिवर्ष आषाढ़ महीने के शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि से प्रारंभ होकर 9 दिनों तक चलती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस दिन अर्थात आषाढ़ महीने के शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को भगवान जगन्नाथ अपनी मौसी (अब मौसी मां मंदिर) के घर से होते हुए गुंडिचा मंदिर गए थे। इस दिन सूर्योदय से पहले ही रथयात्रा की तैयारियां शुरू हो जाती हैं। जिसमें भगवान को खिचड़ी भोग के बाद रथ प्रतिष्ठा और अन्य विधियां होती हैं। फिर सेवादार भगवान जगन्नाथ, बलराम और सुभद्रा की मूर्तियों को रस्सियों के जरिये रथों तक लाते हैं। ये रस्सियां सालभर भगवान के पहने हुए कपड़ों से बनती हैं। फिर रथों की पूजा की जाती है और प्रतिमाओं का श्रृंगार होता है। इसके बाद स्थानीय राजघराने के महाराज 'छोरा पोहरा' की परंपरा पूरी करते हैं। इसमें सोने के झाड़ू से रथों को बुहारा जाता है। फिर रथों की सीढ़ियों को खोला जाता है और भगवान बलभद्र के रथ से काले, बहन सुभद्रा के रथ से भूरे और भगवान जगन्नाथ के रथ से सफेद घोड़े जोड़े जाते हैं। सबसे आगे भगवान बलभद्र का रथ, बीच में बहन सुभद्रा और आखिर में भगवान जगन्नाथ का रथ होता है। इस दिन सूरज डूबने से पहले तीनों रथ गुंडिचा मंदिर यानी मौसी बाड़ी पहुंचते हैं। भगवान यहां 7 दिन तक रहते हैं। यूं तो ये अवधि नौ दिन की है। इसमें 2 दिन आने-जाने के हैं। इसके बाद देवशयनी एकादशी को घुरती यात्रा होती है।

इस रथ यात्रा में लगभग दस लाख लोग एकत्र होते हैं। यह रथ यात्रा एक रंगीन और जीवंत त्योहार है, जो भक्तों की बड़ी भीड़ को आकर्षित करता है। भक्तजन रथों को रस्सियों से खींचते हैं, भक्ति गीत गाते हैं और प्रार्थना करते हैं। यह त्यौहार एक महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी है, जो जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को जश्न मनाने और जुलूस में भाग लेने के लिए एक साथ लाता है। इसे दुनिया के सबसे बड़े और सबसे पुराने रथ उत्सवों में से एक माना जाता है, और अब इसे यूनेस्को द्वारा मानवता की एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में भी अंकित किया गया है।

हिन्दुओं की प्राचीन और पवित्र सप्त नगरियों में पुरी, उड़ीसा राज्य के समुद्री तट पर बसा हुआ एक नगर है। जिसमें स्थित जगन्नाथ

मंदिर, विष्णु के आठवें अवतार श्रीकृष्ण जी को समर्पित है। भारत के पूर्व में बंगाल की खाड़ी के पूर्वी छोर पर बसी पवित्र नगरी पुरी उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से थोड़ी दूरी पर है। आज का उड़ीसा प्राचीनकाल में उत्कल प्रदेश के नाम से जाना जाता था।

पुराणों में इसे धरती का वैकुंठ कहा गया है। यह भगवान विष्णु के चार धामों में से एक है। इसे श्रीक्षेत्र, श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र, शाक क्षेत्र, नीलांचल, नीलगिरि और श्री जगन्नाथ पुरी भी कहते हैं। यहां लक्ष्मीपति विष्णु ने तरह-तरह की लीलाएं की थीं। ब्रह्म पुराण और स्कंद पुराण के अनुसार यहां भगवान विष्णु पुरुषोत्तम नीलमाधव के रूप में अवतरित हुए हैं।

स्कंद पुराण में पुरी धाम का भौगोलिक वर्णन मिलता है। स्कंद पुराण के अनुसार पुरी एक दक्षिणवर्ती शंख की तरह है और यह 5 कोस यानी 16 किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। माना जाता है कि इसका लगभग 2 कोस क्षेत्र बंगाल की खाड़ी में डूब चुका है। इसका उदर है समुद्र की सुनहरी रेत जिसे महोदधी का पवित्र जल धोता रहता है। सिर वाला क्षेत्र पश्चिम दिशा में है जिसकी रक्षा महादेव करते हैं। शंख के दूसरे घेरे में शिव का दूसरा रूप ब्रह्म कपाल मोचन विराजमान है। माना जाता है कि भगवान ब्रह्मा का एक सिर महादेव की हथेली से चिपक गया था और वह यहीं आकर गिरा था, तभी से यहां पर महादेव की ब्रह्म रूप में पूजा करते हैं। शंख के तीसरे वृत्त में मां विमला और नाभि स्थल में भगवान जगन्नाथ रथ सिंहासन पर विराजमान है।

जगन्नाथ का अर्थ है 'विश्व के भगवान'। सनातन परंपरा में भगवान जगन्नाथ को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा पर्व का इतिहास काफी प्राचीन है लगभग बारहवीं सदी से। ऐसा भी माना जाता है कि जगन्नाथ-पुरी रथ यात्रा की शुरुआत सन् 1150 में गंगा राजवंश द्वारा की गयी थी। भगवान जगन्नाथ के रथ यात्रा का विस्तृत विवरण हिंदू पवित्र ग्रंथों जैसे स्कंद पुराण, नारद पुराण, पद्म पुराण, ब्रह्म पुराण, आदि में भी किया गया है। पद्म पुराण के अनुसार, भगवान जगन्नाथ की बहन ने एक बार नगर देखने की इच्छा जाहिर की थी। तब जगन्नाथ जी और बलभद्र अपनी बहन सुभद्रा को रथ पर बैठाकर नगर दिखाने निकल पड़े। इस दौरान वे मौसी के घर गुंडिचा मंदिर भी गए और वहां नौ दिन तक ठहरे। ऐसी मान्यता है कि तभी से यहां पर रथयात्रा निकालने की परंपरा है। यह दुनिया का सबसे पुराना रथ जुलूस माना जाता है, यह त्योहार अद्वितीय है जहां तीन हिंदू देवताओं को उनके भक्तों से मिलने के लिए एक रंगीन जुलूस के रूप में उनके मंदिरों से बाहर ले जाया जाता है। भगवान जगन्नाथ हिंदू देवताओं श्री कृष्ण, श्री विष्णु, एवं श्री राम का एक रूप हैं जिनकी ओडिशा में पूजा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि जो भक्त इस रथ यात्रा में शामिल होकर भगवान के रथ को खींचते हैं उन्हें 100 यज्ञों के समान पुण्य का फल मिलता है। ऐसी मान्यता है कि जो भी व्यक्ति इस रथ यात्रा के दौरान जगन्नाथ पुरी दर्शन हेतु जाता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं और पापों से मुक्ति मिलती है। इस रथ यात्रा का आरम्भ राजाओं द्वारा पारंपरिक ढंग से मंत्र उच्चारण के साथ होता था। रथ यात्रा शुरू होने पर सैकड़ों भक्त मोटे-मोटे रस्सो से रथ खींचते हैं, इसमें सबसे पहले बलभद्र जी का रथ चलना शुरू होता है, उसके बाद सुभद्रा जी का रथ होता है, अंत में भगवान जगन्नाथ जी के रथ को भक्त बड़े ही धूमधाम और श्रद्धा पूर्वक खींचते हैं।

जगन्नाथ-पुरी रथ यात्रा कब से और किस कारण से प्रारंभ हुई इस संबंध में हमें कई प्रकार की कथाएं सुनने को मिलती है। कुछ लोगों का मानना है कि श्री कृष्ण की बहन सुभद्रा जब अपने मायके आयी थीं तो उन्होंने अपने भाइयों से नगर भ्रमण करने की इच्छा व्यक्त की थी। सुभद्रा के नगर भ्रमण की इच्छा पूरी करने के लिए श्रीकृष्ण और बलराम ने अलग-अलग रथों में बैठकर यात्रा की थी। सुभद्रा की नगर यात्रा की स्मृति में ही यह रथयात्रा पुरी में हर साल होती है। इस रथयात्रा के बारे में स्कंद पुराण, नारद पुराण, पद्म पुराण और ब्रह्म पुराण में भी बताया गया है। एक कथा यह भी है कि चारण परम्परा के अनुसार भगवान द्वारिकाधीशजी के साथ, बलराम और सुभद्राजी का समुद्र के किनारे अग्निदाह किया गया था। कहते हैं कि उस वक्त समुद्र के किनारे तूफान आ गया और द्वारिकाधीशजी के अधजले शव पुरी के समुद्र के तट पर बहते हुए पहुंच गए। पुरी के राजा ने तीनों शवों को अलग-अलग रथ में विराजित करवाया और पूरे नगर में लोगों ने खुद रथों को खींचकर घुमाया और अंत में जो दारु का लकड़ी शवों के साथ तैर कर आई थी उसी से पेटी बनवा कर उन शवों को उनमें रखकर उसे भूमि में समर्पित कर दिया। इस घटना की स्मृति में ही आज भी इस परंपरा को निभाया जाता है। चारणों की पुस्तकों में इसका उल्लेख मिलता है।

यह भी कहा जाता है कि जब राजा इंद्रद्युम ने जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां बनवाई तो रानी गुंडिचा ने मूर्तियां बनाते हुए मूर्तिकार विश्वकर्मा और मूर्तियों को देख लिया जिसके चलते मूर्तियां अधूरी ही रह गई तब आकाशवाणी हुई कि भगवान इसी रूप में स्थापित होना चाहते हैं। इसके बाद राजा ने इन्हीं अधूरी मूर्तियों को मंदिर में स्थापित कर दिया। उस वक्त भी आकाशवाणी हुई कि भगवान

जगन्नाथ साल में एक बार अपनी जन्मभूमि मथुरा जरूर आएंगे। स्कंदपुराण के उत्कल खंड के अनुसार राजा इंद्रद्युम ने आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन प्रभु के उनकी जन्मभूमि जाने की व्यवस्था की। तभी से यह परंपरा रथयात्रा के रूप में चली आ रही है।

एक पौराणिक कथा यह भी है कि स्नान पूर्णिमा यानी ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन जगत के नाथ श्री जगन्नाथ जी का जन्मदिन होता है। उस दिन प्रभु जगन्नाथ को बड़े भाई बलराम जी तथा बहन सुभद्रा के साथ रत्नसिंहासन से उतार कर मंदिर के पास बने स्नान मंडप में ले जाया जाता है। एक सौ आठ कलशों से उनका शाही स्नान होता है। फिर मान्यता यह है कि इस स्नान से प्रभु बीमार हो जाते हैं उन्हें ज्वर आ जाता है। तब पंद्रह दिन तक प्रभु जी को एक विशेष कक्ष में रखा जाता है। जिसे ओसर घर कहते हैं। इस पंद्रह दिनों की अवधि में महाप्रभु को मंदिर के प्रमुख सेवकों और वैद्यों के अलावा कोई और नहीं देख सकता। इस दौरान मंदिर में महाप्रभु के प्रतिनिधि अलारनाथ जी की प्रतिमा स्थपित की जाती हैं तथा उनकी पूजा अर्चना की जाती है। पंद्रह दिन बाद भगवान स्वस्थ होकर कक्ष से बाहर निकलते हैं और भक्तों को दर्शन देते हैं। जिसे नव यौवन नैत्र उत्सव भी कहते हैं। इसके बाद द्वितीया के दिन महाप्रभु श्री कृष्ण और बडे भाई बलराम जी तथा बहन सुभद्रा जी के साथ बाहर राजमार्ग पर आते हैं और रथ पर विराजमान होकर नगर भ्रमण पर निकलते हैं।

इस रथ यात्रा के लिए जिन तीन पवित्र रथों का निर्माण किया जाता है उनमे में किसी भी आधुनिक प्रकार के कील, कांटों व धातु का प्रयोग नहीं किया जाता। रथों के लिए काष्ठ का चयन बसंत पंचमी के दिन से शुरू होता है और उनका निर्माण अक्षय तृतीया से प्रारम्भ होता है। भगवान जगन्नाथ, देवी सुभद्रा और भगवान बलभद्र के लिए अलग अलग रथ बनाए जाते हैं। प्रत्येक में मुख्य देवता सहित नौ अन्य देवता होते हैं। ये ब्रह्मांड के नौ ग्रहों को इंगित करते हैं। एक रथ को उसके विशिष्ट नाम, उसके रंगों, उसके सारथी, उसके घोड़ों और उसका नियंत्रण करने वाली बागडोर द्वारा भी पहचाना जाता है।

श्री जगन्नाथ जी अर्थात् श्रीकृष्ण जी का रथ 45 फीट ऊँचा होता है, इसमें 16 पहिये होते है, जिसका व्यास 7 फीट का होता है, पूरे रथ को लाल व पीले कपड़े से सजाया जाता है। इस रथ की रक्षा गरुड़ करता है। इस रथ को दारुका चलाता है। रथ में जो झंडा लहराता है, उसे त्रैलोक्यमोहिनी कहते है। इसमें चार घोड़े होते हैं। इस रथ में वर्षा, गोबर्धन, कृष्णा, नरसिंघा, राम, नारायण, त्रिविक्रम, हनुमान व रूद्र विराजमान रहते है। इसे जिस रस्सी से खींचते है, उसे शंखचूडा नागनी कहते है।

रथ यात्रा में चलने वाला बलराम जी का रथ 43 फीट ऊँचा होता है, इसमें 14 पहिये होते है। इसे लाल, नीले, हरे रंग के कपड़े से सजाया जाता है। इसकी रक्षा वासुदेव करते है। इसे मताली नाम का सारथी चलाता है। इसमें गणेश, कार्तिक, सर्वमंगला, प्रलाम्बरी, हटायुध्य, मृत्युंजय, नाताम्वारा, मुक्तेश्वर, शेषदेव विराजमान रहते है। इसमें जो झंडा लहराता है, उसे उनानी कहते है। जिस रस्सी से इस रथ को खींचते है, उसे बासुकी नागा कहा जाता है।

रथ यात्रा का तीसरा पवित्र रथ 42 फीट ऊँचा सुभद्रा जी का रथ होता है जिसमें 12 पहिये होते है। इसे लाल व काले रंग के कपड़े से सजाया जाता है। इस रथ की रक्षा जयदुर्गा करता है तथा इस रथ का सारथी अर्जुन होता है। इसमें नंद्रिबक झंडा लहराता है। इसमें चंडी, चामुंडा, उग्रतारा, वनदुर्गा, शुलिदुर्गा, वाराही, श्यामकली, मंगला, विमला विराजमान होती है। इसे जिस रस्सी से खींचते है, उसे स्वर्णचूडा नागनी कहते है।

इन रथों को हजारों लोग मिलकर खींचते है, सभी लोग एक बार इस रथ को खीचना चाहते है, क्योंकि इससे उन्हें लगता है कि उनकी सारी मनोकामना पूरी होती है। यही वो समय होता है जब श्री जगन्नाथ जी को करीब से देखा जा सकता है। इसमें भाग लेने हेतु लाखों की संख्या में बाल, युवा, वृद्ध, नारी देश के सुदूर प्रांतों से आते हैं। अपने आराध्य भगवान श्री जगन्नाथ के दर्शन करते हैं और मन्नत मानते है। रथ यात्रा के माध्यम से युगों-युगों से महाप्रभु रथ पर सवार होकर भक्तों को दर्शन देते रहे हैं। जैसे ही भगवान श्री जगन्नाथ रथ पर विराजमान होते हैं, रथ मंदिर बन जाता है, और महाप्रभु उस मंदिर के अधिष्ठाता देवता हैं। इसीलिए रथ को छूने मात्र से ही जन्म-जन्मांतर के पापों का क्षय हो जाता है।

यात्रा पूरी होने के बाद जब इन रथों का विसर्जन होता है तो रथ के पहियों को धार्मिक संस्थाएं व धार्मिक लोग अपने-अपने क्षेत्रों में ले जाकर स्थापित करते हैं और रथ की लकड़ी का प्रयोग हवन यज्ञ व मंदिर का प्रसाद बनाने के लिए किया जाता है।

कहा जाता है कि भगवान श्री जगन्नाथ जी के रथ के 16 पहिये, बलभद्र जी के रथ के 14 पहिये, सुभद्रा जी के रथ के 12 पहिये है इसी प्रकार से इन पहियों की कुल संख्या 42 है। रथ यात्रा के दौरान 42 पहिए और लौटती रथ यात्रा के दौरान 42 पहिए, अर्थात् कुल 84 पहियों को जिसने 'बड़ दाण्ड' पर चलते हुए देख लिया, उसे 84 योनियों में भटकने के भय और पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है। ढोल, नगाड़ों, तुरही और शंखध्वनि के बीच भक्तगण इन रथों को खींचते हैं। कहते हैं, जिन्हें रथ को खींचने का अवसर प्राप्त होता है, वह महाभाग्यवान माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, रथ खींचने वाले को मोक्ष की प्राप्ति होती है। यात्रा पूरी होने के बाद जब इन रथों का विसर्जन होता है तो रथ के पहियों को धार्मिक संस्थाएं व धार्मिक लोग अपने-अपने क्षेत्रों में ले जाकर स्थापित करते हैं और रथ की लकड़ी का प्रयोग हवन यज्ञ व मंदिर का प्रसाद बनाने के लिए किया जाता है। मान्यता है कि पवित्र रथ की लकड़ी से हवन यज्ञ करने व प्रसाद प्राप्त करने से और पहियों के मात्र दर्शन करने से जो फल प्राप्त होता है उसकी तुलना किसी बड़े से बड़े पुण्य से भी नहीं की जा सकती।

पत्रकारिता जगत में हलचल

अरविंद मार्डीकर- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के समवेत सभागार में शनिवार को हुई अंशधारकों की बैठक में निदेशक मंडल का चुनाव किया गया। निदेशक मंडल के अध्यक्ष पद पर अरविंद मार्डीकर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। इस दौरान चुनाव अधिकारी के रूप में रजिस्ट्रार अहफ को-ऑपरेटिव सोसाइटीज की ओर से एडवोकेट अजीत कुमार मौजूद रहे। निदेशक मंडल में वरिष्ठ पत्रकार अच्युतानंद मिश्र (लखनऊ), वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री रामबहादुर राय (नई दिल्ली), प्रसिद्ध समाजसेवी रविंद्र संघवी (मुंबई), दशमेश चौरिटेबल ट्रस्ट के प्रमुख मनमोहन सिंह चावला (गुरुग्राम), समाजसेवी एवं शिक्षा क्षेत्र से जुड़े प्रदीप 'बाबा मधोक' (वाराणसी), चार्टर्ड अकाउंटेंट जय नारायण गुप्ता (कोलकाता) सदस्य होंगे। साथ ही पद्मश्री बलबीर दत्त (रांची) और परेशकांत मांगलिक (मुंबई) स्थायी आमंत्रित सदस्य चुने गये हैं।

रमेश मेनन- 'एचटी मीडिया' समूह ने इंडस्ट्री के दिग्गज रमेश मेनन को अपने ऑडियो बिजनेस का चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर नियुक्त किया है। बता दें कि इस समूह में फीवर, रेडियो वन, रेडियो नशा और पंजाबी फीवर जैसे लोकप्रिय रेडियो ब्रैंड्स शामिल हैं। एचटी मीडिया समूह के साथ मेनन की यह दूसरी पारी है। इससे पहले रमेश मेनन पैकेज्ड फूड बेवरेज कंपनी 'Wingreens Farms' में ग्रुप सीईओ के तौर पर अपनी भूमिका निभा रहे थे। बता दें कि मेनन को तीन दशक से ज्यादा का अनुभव है और इस दौरान वह फ्यूचर रिटेल, हाइपरसिटी रिटेल, रिलायंस कम्युनिकेशंस, एयरटेल और पेप्सिको जैसे प्रमुख ब्रैंड्स में अहम भूमिकाएं निभा चुके हैं। आपको बता दें कि रमेश मेनन एचटी मीडिया समूह के रेडियो बिजनेस के सीईओ रह चुके हैं। इससे पहले वह यहां चीफ बिजनेस ऑफिसर थे।

नीरज सिंह- 'आजतक' में बतौर एडिटर काम कर रहे नीरज सिंह ने अब 'इंडिया डेली' के साथ अपनी नई पारी शुरू की है। यहां वह आउटपुट हेड की जिम्मेदारी निभाएंगे। उल्लेखनीय है कि वरिष्ठ पत्रकार शमशेर सिंह के नेतृत्व में 'इंडिया डेली' न्यूज चैनल जल्द लॉन्च होने जा रहा है। 'आजतक' से पहले नीरज सिंह 'जी हिन्दुस्तान' के आउटपुट हेड की जिम्मेदारी निभा रहे थे। यहां पर टीवी के साथ 'जी हिन्दुस्तान' के डिजिटल और सोशल का प्रभार भी नीरज सिंह के पास ही था, जहां उन्होंने कई सफल प्रयोग किए, जिसके चलते कई बार लाइव व्युअरशिप में 'जी हिन्दुस्तान' दूसरे चैनलों से आगे रहा।

धनंजय कुमार- पत्रकार धनंजय कुमार ने जानी-मानी न्यूज एजेंसी 'एशियन न्यूज इंटरनेशनल' को अलविदा बोलकर नई मंजिल तलाश ली है। उन्होंने अब 'आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस' पर आधारित ऑनलाइन वीडियो न्यूज प्लेटफॉर्म 'एडिटरजी' में डिप्टी एडिटोरियल लीड (हिंदी न्यूज) के पद पर जॉइन किया है।

बता दें कि धनंजय ने करीब ढाई महीने पहले ही 'एएनआई' में असाइनमेंट डेस्क पर ज्वाइन किया था। इससे पहले वह इंडियन माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म 'कू' में बतौर मैनेजर (ऑपरेशंस) अपनी जिम्मेदारी निभा रहे थे और दिल्ली से अपना कामकाज देख रहे थे। 'कू' से पहले वह 'ईटीवी' ग्रुप में करीब सात साल से कार्यरत रहे थे और 'ईटीवी भारत' में स्टेट हेड (उत्तर प्रदेश) के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभा रहे थे।

निशित वोरा- 'वायकॉम 18' मीडिया प्राइवेट लिमिटेड ने निशित वोरा को अपने यहां नियुक्त किया है। उन्हें इस कंपनी के इंटीग्रेटेड नेटवर्क सॉल्यूशंस में हेड (मार्केटिंग, ब्रैंड और डिजिटल) की जिम्मेदारी दी गई है। अपनी इस नियुक्ति के बारे में निशित वोरा ने लिंक्डइन पर जानकारी साझा की है।

इस पोस्ट में निशित ने लिखा है, 'यह Viacom18 Media Private Limited के इंटीग्रेटेड नेटवर्क सॉल्यूशंस में हेड-मार्केटिंग, ब्रैंड और डिजिटल के रूप में अपने नए कार्य को शुरू करने का समय है।' इससे पहले निशित वोरा थिंक 9 कंज्यूमर टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड में बतौर वाइस प्रेजिडेंट (डिजिटल) अपनी जिम्मेदारी निभा रहे थे।

बिनॉय प्रभाकर- वरिष्ठ पत्रकार बिनॉय प्रभाकर ने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के साथ अपनी नई पारी शुरू की है। यहां उन्होंने डिजिटल टीम में बतौर चीफ कंटेंट ऑफिसर ज्वाइन किया है। बता दें कि इससे पहले तीन साल से ज्यादा समय से बिनॉय प्रभाकर

'नेटवर्क18' की बिजनेस न्यूज वेबसाइट 'मनीकंट्रोल' में एडिटर के तौर पर अपनी भूमिका निभा रहे थे।

अपनी नई नियुक्ति के बारे में बिनय प्रभाकर ने सोशल मीडिया पर जानकारी शेयर की है। अपनी एक लिंक्डइन पोस्ट में बिनय प्रभाकर ने लिखा है, 'मैं देश के सबसे पुराने और सबसे सम्मानित मीडिया ब्रैंड्स में से एक का हिस्सा बनकर गौरवान्वित और उत्साहित महसूस कर रहा हूं। इसे एक तरह से मेरी घर वापसी भी कह सकते हैं, क्योंकि वर्ष 2001 में मैंने एचटी से ही बतौर ट्रेनी कॉपी एडिटर अपने करियर की शुरुआत की थी।'

यश शर्मा- युवा पत्रकार यश शर्मा ने अंग्रेजी अखबार 'द फाइनेंसियल एक्सप्रेस' में अपनी पारी को विराम दे दिया है। वह एक साल से ज्यादा समय से इस समूह की डिजिटल टीम के साथ जुड़े हुए थे और ऑटो सेक्टर कवर कर रहे थे। यश शर्मा ने अपनी नई पारी की शुरुआत 'टाइम्स समूह' से की है। बतौर डिजिटल कंटेंट प्रड्यूसर यहां वह समूह के अखबार 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' व डिजिटल शाखा दोनों में ऑटोमोटिव सेक्टर से जुड़ी खबरों पर काम करेंगे।

अवनीश शर्मा- युवा पत्रकार अवनीश शर्मा ने 'रिपब्लिक भारत' को अलविदा कह दिया है। यहां वह बतौर वीडियो प्रड्यूसर करीब चार महीने से डिजिटल टीम का हिस्सा थे। अवनीश शर्मा ने अब अपनी नई मंजिल तलाश ली है।

अमित द्विवेदी- ऑटो सेक्टर के विशेषज्ञ पत्रकार अमित द्विवेदी अब टाइम्स ग्रुप के नवभारत टाइम्स से जुड़ गए हैं। उन्होंने यहाँ सलाहकार संपादक (ऑटो) के रूप में ज्वाइन किया है। अमित दैनिक जागरण, अमर उजाला समेत कई अखबारों में काम कर चुके हैं। इनका सोशल मीडिया पर लोकप्रिय चौनल है 'पॉवर ऑन व्हील' नाम से। अयोध्या के मूल निवासी अमित करीब डेढ दशक से मीडिया में हैं।

सौरभ मिश्रा- India ahead इंग्लिश न्यूज चैनल के लिए बतौर रिपोर्टर अपनी पत्रकारिता शुरू करने वाले सौरभ मिश्रा ने अपनी नई पारी की शुरुआत हिंदी खबर न्यूज चैनल के लिए रिपोर्टर प्रयागराज ब्यूरो के तौर पर की है।

राजीव त्रिपाठी- राजीव त्रिपाठी ने भारत 24 चैनल से इस्तीफा दे दिया है। वे AVP सेल्स थे। अब वे जी मीडिया के पार्ट हो गए हैं जहां उनका पद Regional Head का है। नए रोल में वे जी मीडिया का MPCG चैनल देखेंगे। राजीव पहले भी Zee Media में पाँच सालों तक Zee MPCG retail Sales Head रह चुके हैं। जी से पहले ईटीवी और नेटवर्क18 में ग्यारह साल तक कार्यरत रहे। अमर उजाला देहरादून में डिप्टी न्यूज एडिटर के पद पर तैनात ऋषिकांत यादव का तबादला बरेली के लिए कर दिया गया है।

योगेश पाण्डेय- न्यूज एंकर योगेश पांडेय ने इंडिया वाइस न्यूज चैनल में अपनी पारी को विराम दे दिया है। योगेश पांडेय ने साधना न्यूज से बतौर संवाददाता अपने करियर की शुरुआत की थी ।

विजय रावत- विजय रावत ने अपनी नई पारी मंजरी फाउंडेशन के साथ शुरू कर दी है। जहां उनको हेड- स्ट्रैटजिक कम्यूनिकेशन एंड नेटवर्किंग बनाया गया है। वैसे जनवरी में ही उन्होंने तीन महीने के एसाइनमेंट पर मंजरी फाउंडेशन ज्वाइन कर लिया था लेकिन एक अप्रैल से पूरी तरह से उन्होंने मंजरी फाउंडेशन की कोर टीम के सदस्य के तौर पर काम करना शुरू कर दिया है।

अश्विनी शर्मा- टीवी9, भारत समाचार समेत कई न्यूज चैनलों में काम कर चुके पत्रकार अश्विनी शर्मा ने अब भारत एक्सप्रेस चैनल के साथ नई पारी की शुरुआत की है। बनारस के रहने वाले अश्विनी रायपुर, मुंबई, लखनऊ कई शहरों में विभिन्न मीडिया संस्थानों में सेवारत रहे हैं।

उन्होंने भारत एक्स्प्रेस न्यूज नेटवर्क में बतौर एसोसिएट एडिटर ज्वाइन किया है। इससे पहले अश्विनी विगत 23 वर्षों में इन मुंबई, स्टार न्यूज, तहलका टीवी, लाइव इंडिया, आईटीएन मुंबई, टीवी9 महाराष्ट्र, भास्कर न्यूज नोएडा, सहारा टीवी नोएडा, भारत समाचार लखनऊ आईबीसी 24 छत्तीसगढ, में विभिन्न पदों पर काम कर चुके हैं।

संकलन : मोहित कुमार (प्रोड्यूसर, न्यूज 24)

मीडिया सुर्खियां

26 अप्रैल – भारतीय सेना पहली बार 10 महिला अधिकारियों को आर्टिलरी रेजिमेंट में शामिल करेगी। इस वर्ष सेना में शामिल होने वाले प्रत्येक बैच की 10 प्रतिशत से अधिक महिला अधिकारियों को आर्टिलरी रेजिमेंट में शामिल किया जाएगा।

27 अप्रैल – अब देश की सेवा करते हुए बलिदान होने वाले सैनिकों के बच्चों की देखभाल और भरण पोषण के लिए दोगुना भत्ता मिलेगा, सेना कमांडरों के सम्मेलन में लिया गया निर्णय।

♦ श्री बद्रीनाथ धाम के कपाट खुले, हजारों श्रद्धालु पहुंचे, हेलीकॉप्टर से हुई पुष्प वर्षा, पीएम मोदी के नाम से पहली पूजा।

28 अप्रैल – प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के 18 राज्यों और 2 केन्द्र शासित प्रदेशों में 91 एफएम ट्रांसमीटरों का लोकार्पण किया, इससे सोशल एवं कल्चरल कनेक्टिविटि को मिलेगा बढ़ावा।

♦ अंगदान करने वाले भारत सरकार के कर्मचारियों को मिलेगा 42 दिन का अवकाश।

30 अप्रैल – आम आदमी पार्टी के विधायक अब्दुल रहमान को बड़ा झटका लगा, कोर्ट ने अब्दुल रहमान और उनकी पत्नी आसमा को दोषी करार दिया।

♦ तीर्थनगरी हरिद्वार में अवैध मजारों पर चला उत्तराखण्ड सरकार का बुलडोजर, तराई के जंगलों में भी अवैध मजारें ध्वस्त।

1 मई– बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र शास्त्री के समक्ष 95 लोगों ने की घर वापसी, अपनाया सनातन धर्म।

2 मई – गैंगस्टर गोल्डी बराड़ ने ली टिल्लू ताजपुरिया की हत्या की जिम्मेदारी, कहा- हमने गोगी की हत्या का बदला ले लिया।

4 मई – शुरू हुई ॐ पर्वत-आदि कैलाश की यात्रा, कुमाऊं द्वार पर शिवभक्तों का हुआ स्वागत।

5 मई – ऑपरेशन कावेरी के अंतर्गत लगभग 3800 भारतीयों को सूडान से निकाला गया है। सूडान में भारतीय दूतावास ने कहा कि पोर्ट सूडान में अब कोई भारतीय नहीं है जो वहां से वापसी का इच्छुक है।

6 मई – जम्मू-कश्मीर में ऑपरेशन त्रिनेत्र के दौरान आतंकवादियों से मोर्चा लेते हुए बलिदान हुए उत्तराखंड के लाल लांस नायक सचिन सिंह रावत और प्रमोद नेगी के पार्थिव देह जौलीग्रांट एयरपोर्ट पर पहुंचने पर सीएम धामी ने श्रद्धांजलि दी।

♦ भारत ताशकंद में एशिया कप चरण दो तीरंदाजी विश्व रैंकिंग टूर्नामेंट में 14 पदक जीतकर शीर्ष पर रहा। भारत ने 7 स्वर्ण, 5 रजत और 2 कांस्य पदक प्राप्त किए हैं।

♦ भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने दोहा डायमण्ड लीग अपने नाम किया। उन्होंने 88.67 मीटर भाला फेंक कर यह खिताब जीता।

7 मई – PFI के खिलाफ यूपी ATS की बड़ी कार्रवाई, कई जिलों में छापेमारी कर करीब 12 संदिग्धों को हिरासत में लिया।

♦ प्रादेशिक सेना (टीए) की महिला अधिकारियों की नियंत्रण रेखा पर प्रादेशिक सेना की इंजीनियर रेजिमेंटों के साथ और नई दिल्ली में टीए समूह मुख्यालय में कर्मचारी अधिकारियों के रूप में नियुक्ति को रक्षा मंत्री की मंजूरी मिल गई है।

8 मई – केरल के मल्लपुरम जिले में लगभग 35 पर्यटकों को ले जा रही नौका के डूब जाने से 22 लोगों की मृत्यु हो गई। मरने वालों में 15 बच्चे और 5 महिलाएं भी शामिल हैं।

9 मई – मुजफ्फरनगर दंगे के दौरान गैंगरेप के आरोपियों को 20 साल कैद।

♦ श्रद्धा वॉल्कर हत्याकांड के आरोपी आफताब अमीन पूनावाला के खिलाफ दिल्ली की साकेत कोर्ट ने हत्या और सबूत नष्ट करने के मामले में आरोप तय किए।

10 मई – ATS की टीम ने 11 लोगों को गिरफ्तार किया। इन लोगों के कट्टरपंथी इस्लामिक संगठन हिज्ब-उत-तहरीर (HUT) से जुड़े होने के प्रमाण मिले हैं। भोपाल से 10, छिंदवाड़ा से 1, तेलंगाना से 5 सदस्यों को हिरासत में लिया।

11 मई – पंजाब में अमृतसर स्थित गोल्डन टेंपल के समीप 5 दिन में तीसरी बार धमाका।

12 मई – भारतीय रेलवे की वन स्टेशन वन प्रोडक्ट- ओएसओपी योजना के अंतर्गत, देश भर में अब तक 21 राज्यों और तीन केंद्र शासित प्रदेशों में 785 आउटलेट्स के साथ 728 स्टेशनों को जोड़ा गया

13 मई – जन जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से उत्तराखंड के

देहरादून में आज से चार दिन का श्री अन्न उत्सव प्रारंभ।

14 मई – भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी प्रवीण सूद सीबीआई के अगले निदेशक नियुक्त।

15 मई – सरकार ने घरेलू रक्षा उद्योग को बढ़ावा देने के लिए 928 वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाया।

16 मई – प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रोजगार मेले के अंतर्गत सरकारी विभागों में चयनित 71,000 कर्मियों को नियुक्ति-पत्र जारी किए।

♦ सरकार ने खोए हुए मोबाइल फोन को बंद करने और उसका पता लगाने के लिए संचार साथी पोर्टल का शुभारम्भ किया।

17 मई – जल जीवन मिशन ने बारह करोड़ ग्रामीण परिवारों को नल से जल आपूर्ति प्रदान करने का नया कीर्तिमान स्थापित किया।

18 मई – अर्जुन राम मेघवाल नए विधि मंत्री बनाए गए, कीरेन रिजिजू को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय सौंपा गया, एस. पी. सिंह बघेल स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री बने।

♦ काशी विश्वनाथ धाम में अतिथि गृह का संचालन शुरू, श्रद्धालु ऑनलाइन और ऑफलाइन कर सकेंगे बुकिंग।

19 मई – रूस के मनोवैज्ञानिक एंटोन एंड्रीव ने काशी में अपनाया सनातन धर्म, दीक्षा लेकर बने अनंतानंद।

20 मई – **G-20** के लिए तैयार हुआ ऋषिकेश स्थित मुनि की रेती और लक्ष्मण झूला क्षेत्र, जानकी सेतु से लेकर ऋषिकेश गंगा घाटों को दिया गया नया रूप, विदेशी मेहमानों को उत्तराखंड की संस्कृति से रूबरू होने का मिलेगा अवसर।

21 मई – भारतीय रिजर्व बैंक ने स्पष्ट किया कि बिना पर्ची भरे बैंक से एक बार में 2000 रुपये के 10 नोट बदले जा सकते हैं।

22 मई – जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में तीन दिवसीय 'जी-20 पर्यटन कार्य समूह' की बैठक का हुआ शुभारम्भ।

23 मई – यूपी में चार हजार मदरसों को मिल रही है विदेशी फंडिंग, जल्द होगी कार्रवाई।

24 मई – अब सम्पूर्ण विश्व सुनेगा "श्री रामचरितमानस", भजन एवं कीर्तन के साथ 138 घंटे 41 मिनट 02 सेकेंड का गायन, इसे वाराणसी के डॉ जगदीश पिल्लई ने तैयार किया है।

♦ भारत ने अनुदान सहायता के तौर पर बांग्लादेश को 20 ब्रॉड गेज रेल डीजल इंजन सौंपे।

25 मई – प्रधानमन्त्री मोदी ने देहरादून और दिल्ली के बीच वन्दे भारत एक्स्प्रेस रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखाई, उत्तराखंड के लिए यह पहली वंदे भारत ट्रेन है।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

1. हिंदू स्वयंसेवक संघ (HSS) जर्मनी ने न्यू बर्लिन सीनियर सेंटर में गुरु वंदना कार्यक्रम का आयोजन किया। विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों सहित 22 शिक्षकों ने भाग लिया।

2. भारतीय उच्चायोग लंदन द्वारा ब्राइटन बीच पर स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तटीय स्वच्छता का यह कार्यक्रम भारत के G 20 प्रेसीडेंसी के हिस्से के रूप में किया गया।

3. मिस्र के बेरेनिस बंदरगाह के पास खोदाई में भगवान बुद्ध की प्राचीन मूर्ति मिली। यह मूर्ति भारत व मिस्र के व्यापारिक संबंधों पर प्रकाश डालती है। संस्कृत में लिखा एक शिलालेख भी मिला।

4. अमेरिका की 'पांथिक स्वतंत्रता रिपोर्ट' ने फिर उगला भारत के लिए जहर, कहा भारत में खुलेआम अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जाता है, रिपोर्ट को भारत ने तथ्यहीन, निराधार बताते हुए खारिज किया।

5. मन की बात में PM मोदी को सुनने के लिए UK में खचाखच भरा हॉल; न्यूजीलैंड, बर्मिंघम व एडिनबर्ग में वाणिज्य दूतावासों में भी लाइव हुआ कार्यक्रम।

6. भारत और फ्रांस ने रणनीतिक साझेदारी के 25 वर्ष पूरे किए, इसके सम्मान में फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने भारतीय प्रधानमंत्री मोदी को 14 जुलाई, 2023 को पेरिस में बेस्टिल दिवस परेड (Bastille Day Parade) में सम्मानित अतिथि (Guest of Honour) के रूप में आमंत्रित किया है।

7. भारत 2024 में क्वाड शिखर सम्मेलन का करेगा आयोजन, क्वाड देशों ने सीमा पार आतंकवाद और मुंबई आतंकी हमले की निंदा की।

8. ऑपरेशन कावेरी के बीच भारतीय वायुसेना का साहसी कारनामा इतिहास में दर्ज, किया 'नाइट ऑपरेशन'।

9. पापुआ न्यू गिनी के PM जेम्स मरापे ने पीएम मोदी के पैर छुए, भारत के पीएम को एयरपोर्ट पर ही गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया।

10. भारतीय दूतावास ने नीदरलैंड सरकार के साथ साझेदारी में हेग के प्रसिद्ध शेवेनिंगेन समुद्र तट पर जी-20 बीच का सफाई अभियान चलाया। इसके तहत 5,410 सिगरेट बट्स समेत 240 किलोग्राम समुद्री कचरे की सफाई की गई।

11. अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रवक्ता ने कहा कि राष्ट्रपति बाइडेन मानते हैं कि भारत और अमेरिका के रिश्ते महत्वपूर्ण हैं और इन्हें और मजबूत बनाने की जरुरत है।

12. भारत डिजिटल क्रांति में अग्रणी, उसकी वित्तीय समावेशन यात्रा दूसरों के लिए मिसाल : संरा अधिकारी।

क्या आप जानते हैं?

1. G-7 समिट 2023 की मेजबानी कौन सा देश कर रहा है?
(a) जर्मनी (b) इटली
(c) कनाडा (d) जापान

2. 'अशोक चक्र' पाने वाली प्रथम महिला कौन थीं?
(a) नीरजा भनोट (b) कमलेश कुमारी
(c) पी. टी. ऊषा (d) रानी गाइदिनल्यू

3. गायत्री मंत्र किस पुस्तक में मिलता है?
(a) उपनिषद (b) ऋग्वेद
(c) भगवद्गीता (d) यजुर्वेद

4. किस राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में मिलेट्स एक्सपीरियंस सेंटर (MEC) का उद्घाटन किया गया?
(a) असम (b) नई दिल्ली
(c) कर्नाटक (d) केरल

5. तमिल का गौरव ग्रंथ 'जीवकचिन्तामणि' किससे संबंधित है?
(a) जैन (b) बौद्ध
(c) हिन्दू (d) ईसाई

6. भारत और किस देश के बीच 42,000 भारतीयों को काम करने की अनुमति देने पर समझौता हुआ है?
(a) कनाडा (b) जापान
(c) इजरायल (d) साउथ कोरिया

7. भारतीय राष्ट्रीय पंचांग कौन से संवत पर आधारित है?
(a) शक संवत (b) विक्रम संवत
(c) वीर संवत (d) ब्रह्म-संवत

8. तीन दिवसीय 'अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय एक्सपो 2023' कहां आयोजित किया जाएगा?
(a) मुंबई (b) नई दिल्ली
(c) बेंगलुरु (d) पटना

9. अहल्या के पति का नाम था-
(a) महर्षि वसिष्ठ (b) महर्षि विश्वामित्र
(c) महर्षि बृहस्पति (d) महर्षि गौतम

10. किस केंद्रीय मंत्रालय ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित कविताओं, लेखों और प्रकाशनों की पहचान की और उन्हें प्रकाशित किया?
(a) संस्कृति मंत्रालय (b) विदेश मंत्रालय
(c) रक्षा मंत्रालय (d) गृह मंत्रालय

उत्तर : 1-d, 2- a, 3- b 4-b, 5- a, 6- c, 7- a, 8-b, 9-d, 10- a

स्मृति विशेष

पं.माधवराव सप्रे (19 जून, 1871 - 23 अप्रैल, 1926)

जीवन संघर्षों से तपकर निकला वह मूर्धन्य पत्रकार, संपादक और साहित्यकार जिसने सोते हुए भारतीयों को झकझोरकर जगाया। जो हिंदी नवजागरण के अग्रदूत हैं, जिनके बिना हिन्दी भाषा और पत्रकारिता का इतिहास अधूरा है। बात पं.माधवराव सप्रे की हो रही है। सप्रे जी को याद करना उस परंपरा को याद करना है, जिसने देश में न मात्र भारतीयता की अलख जगाई वरन् हिंदी समाज को आंदोलित भी किया। उनके हिस्से इस बात का यश है कि उन्होंने मराठीभाषी होते हुए भी हिंदी की निरंतर सेवा की और अनुवाद कर्म से भी हिंदी को समृद्ध बनाया। देशज चेतना, भारत प्रेम, जनता के दर्द की गहरी समझ उन्हें बड़ा बनाती है।

सप्रे जी को लंबी आयु नहीं मिली। मात्र 54 वर्ष का जीवन किंतु जिस तरह उन्होंने अनेक सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की, पत्र-पत्रिकाएं संपादित किए, अनुवाद किया, अनेक नवयुवकों को प्रेरित कर देश के विविध क्षेत्रों में सक्रिय किया वह विलक्षण है। 26 वर्षों की उनकी पत्रकारिता और साहित्य सेवा ने कई मानक रचे।

सप्रे जी ने अपने वेतन से पैसे बचाकर छत्तीसगढ़ में पहली मासिक पत्रिका "छत्तीसगढ़ मित्र" निकाली। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के कार्यों से प्रभावित सप्रे जी ने 13 अप्रैल,1907 से 'हिंदी केसरी' का प्रकाशन आरंभ किया। लोकमान्य तिलक के आदर्शों पर चलते हुए इस पत्र ने समाज जीवन में बहुत खास जगह बना ली। राष्ट्रीय जागरण की भावना से ओतप्रोत इस पत्र में देश के जाने-माने पत्रकारों का सहयोग रहा।

मुख्य रचनाएँ : स्वदेशी आंदोलन और बॉयकाट, यूरोप के इतिहास से सीखने योग्य बातें, हमारे सामाजिक ह्रास के कुछ कारणों का विचार, माधवराव सप्रे की कहानियाँ, हिंदी केसरी (पत्रिका), छत्तीसगढ़ मित्र (पत्रिका) आदि।

समर्थ गुरू रामदास रचित 'दासबोध' एक अद्भुत कृति है, एक अनुवादक के रूप में सप्रे जी का सबसे बड़ा कार्य है 'दासबोध' को हिंदी के पाठकों को उपलब्ध कराना। लोकमान्य तिलक जिन दिनों मांडले जेल में थे, उन्होंने कारावास में रहते हुए 'गीता रहस्य' की पांडुलिपि तैयार की। इसका अनुवाद करके सप्रे जी ने हिंदी जगत को एक विशेष सौगात दी। उनका एक बहुत बड़ा काम है काशी नागरी प्रचारणी सभा की 'विज्ञान कोश योजना' के अंतर्गत अर्थशास्त्र की मानक शब्दावली बनाना। सप्रे जी का समूचा व्यक्तित्व हिंदी की सेवा को समर्पित है। सप्रे जी ने अनेक संस्थाओं की स्थापना की जिनमें हिंदी सेवा की संस्थाएं हैं, सामाजिक संस्थाएं हैं तो वहीं विद्यालय भी हैं। जबलपुर में हिंदी मंदिर, रायपुर में रामदासी मठ, जानकी देवी पाठशाला इसके उदाहरण हैं।

माधव सप्रे जी ऐसे व्यक्तित्व थे जो स्वयं पार्श्व में रहकर लोगों का निर्माण करते थे। सप्रे जी इस देश के नौजवानों को जगाते हुए भारतीयता के उजले पन्नों से अवगत कराना नहीं भूलते। इसीलिए वे गीता के रहस्य खोजते हैं, महाभारत की मीमांसा करते हैं, समर्थ गुरू रामदास के सामर्थ्य से देशवासियों को अवगत कराते हैं। मात्र राजनीतिक-सामाजिक विषयों पर ही नहीं, अपितु आर्थिक क्षेत्र जैसे जटिल विषयों पर भी उन्होंने अपनी कलम चलाई। 'स्वदेशी आंदोलन और बायकाट' निबन्ध में एक ऐसी जानकारी भी मिलती है जो हमें स्तब्ध कर देती है। भारत के लिए वेद-वाक्य की तरह कहा जाने वाला वाक्य कि 'भारत एक कृषि प्रधान देश है', पूर्व से चला आ रहा यथार्थ नहीं अपितु अंग्रेजों के अमानवीय शोषण और अत्याचारों का परिणाम है। घर घर आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी था और सामाजिक संरचना में स्त्री की विशेष भागीदारी थी। अंग्रेजों द्वारा भारत के घर घर में चलने वाले कुटीर उद्योगों, काम-धंधों और कारीगरी को बुरी तरह चौपट कर पहले सभी को बेरोजगार किया गया, फिर कड़े कानून बनाकर जबरदस्ती उनसे खेती करवाई गई। अनेक अन्यायी, कठोर और जालिम उपायों से अंग्रेजों ने इस देश के जुलाहों और अन्य व्यवसायियों का रोजगार बंद कर दिया। सप्रे जी अनेक अंग्रेज अधिकारियों और इतिहासकारों को उद्धृत कर यह प्रमाणित करते हैं कि भारत में मात्र कृषि ही नहीं, कारीगरी तथा अन्य कुटीर उद्योग भी प्रधान थे। इसे कृषि प्रधान देश तो अंग्रेजों ने अपने कुटिल इरादों से बना दिया।

"देशाभिमान कोरी बातों में नहीं है जो अपने देश के लिए शारीरिक मेहनत करता है, जो देशकार्य में पूरा मन लगाता है और जो देशहित साधनार्थ केवल धन ही नहीं किन्तु जीवन भी अर्पित कर देता है वही देश का सच्चा प्रेमी है। चिराग तभी तक रहता है जब तक उसके तेल में बत्ती जला करती है। क्या हमारे हिंदुस्तान में ऐसे दो चार आदमी हैं जो अपने देश का प्रकाश फैलाने के लिए उसके स्नेह यानि तेल में अपने को दिन रात जलाया करते हैं?"- पं.माधवराव सप्रे, (छत्तीसगढ़ मित्र)

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

- Digital Library
- Atal Tinkering Laboratory
- Well Equipped Laboratories
- All Sports Activities
- Studio for Smart Education
- Value Based Education
- Easy Transport options from most suburbs
- Unique & Innovative Programs
- Modern Resources & Technologies

H-107, Sector-12, NOIDA
E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com
Contact No. 0120-4238317, 9910665195